यूको अवध संदेश

लखनऊ अंचल की छमाही पत्रिका, अंक 37 , अक्तूबर-मार्च 2026

यूको बैंक UCO BANK

अंचल कार्यालय लखनऊ,
बी 1/122, विनीत खंड, गोमतीनगर, लखनऊ, उ.प्र. – 226010

गौरव के क्षण

भारतीय निवेशक संघ द्वारा आयोजित बैंकिंग लीडरशिप समिट एंड एवार्ड 2025 में लखनऊ अंचल के अंचल प्रमुख एवं उपमहाप्रबंधक श्री आशुतोष सिंह को सभी राष्ट्रीयकृत बैंकों में 'सर्वश्रेष्ठ उपमहाप्रबंधक 2025' के खिताब से नवाज़ा गया।।

यह सम्मान माननीय उद्योग मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार श्री नंद गोपाल गुप्ता, 'नंदी' जी के कर कमलों से श्री आशुतोष सिंह ने ग्रहण किया।

संरक्षक

श्री आशुतोष सिंह
अंचल प्रमुख

मार्गदर्शन

श्री नागराज
उप अंचल प्रमुख

श्री आलोक कुमार
सहायक महाप्रबंधक

श्री जे एस नेगी
सहायक महाप्रबंधक

श्री निमेष दीप
सहायक महाप्रबंधक

श्री किरण कुमार के.पी
सहायक महाप्रबंधक

विशेष सहयोग

श्री वीरेन्द्र सिहाग
मुख्य प्रबंधक

श्री संतोष कुमार सिन्हा
मुख्य प्रबंधक

सहयोग
श्री अंशुमन मिश्रा
सहायक प्रबंधक

संपादन

डॉ शिल्पी शुक्ला
मुख्य प्रबंधक राजभाषा

विषय सूची

अंचल प्रमुख की कलम से

उप अंचल प्रमुख की कलम से

संपादकीय

लेख : बैंकों में पूर्व चेतावनी प्रणाली की उपयोगिता- श्री निमेश दीप

लेख : तकनीकि नवाचार-फिनटेक – श्री मनीष कुमार

आयोजन : हिंदी कार्यशाला

कविता : मैं एक कामकाजी मां हूं – श्रीमती गायत्री देवी

कलाकृति : श्रीमती गायत्री देवी

आयोजन : यूको बैंक जी.डी.बिड़ला व्याख्यानमाला

आयोजन : यूको राजभाषा सम्मान

लेख : हिंदी भाषा नहीं संस्कृति है- सुश्री छवि सक्सेना

आयोजन : बैंक का 84 वां स्थापना दिवस

कविता : बैंक राष्ट्र की शान – श्रीमती सारिका गुप्ता

व्यवसाय : मार्च 2026

लेख : समय के साथ हिंदी की कदमताल- श्री वीरेन्द्र सिहाग

पुस्तक समीक्षा - डॉ शिल्पी शुक्ला

बैंक की योजना – एनपीएस वात्सल्य

लेख : ग्राहक सेवा में आर्टीफिशियल इंटेलिजेंस और चैटबोट्स की उपयोगिता –श्री मनोज कुमार

विमोचन : यूको अवध संदेश

राजभाषा हिंदी तिमाही प्रगति रिपोर्ट- महत्वपूर्ण बिंदु

आयोजन : अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस 2026

कविता : पतङ्ग – सुश्री प्राची श्रीवास्तव

लघु कहानी : मन की बात – श्रीमती दीप्ति विश्वकर्मा

कहानी : मजलिस की फेहरिस्त – श्री अंशुमन मिश्रा

कविता : बस यादें रहती हैं – श्री अविनाश तिवारी

नराकास लखनऊ – उपलब्धियां

आलेख : शक्ति का नाम ही नारी है – श्री शशांक दीक्षित

आयोजन : अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2026-राजभाषा संगोष्ठी

लेख : सरफेसी अधिनियम- श्रीमती अनीता कुमारी

आयोजन :विश्व हिंदी 2026

कुछ मीठा हो जाए.. चाकलेट बनाना केक – श्रीमती तनुश्री वर्मा

रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार है।

एक टीम,एक स्वप्न

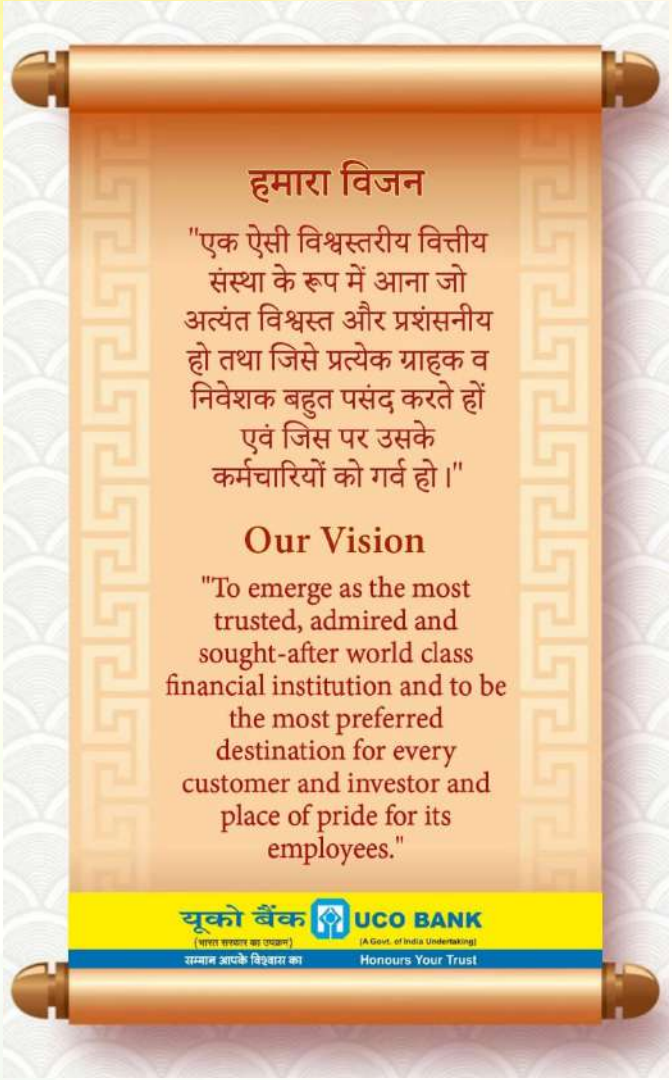

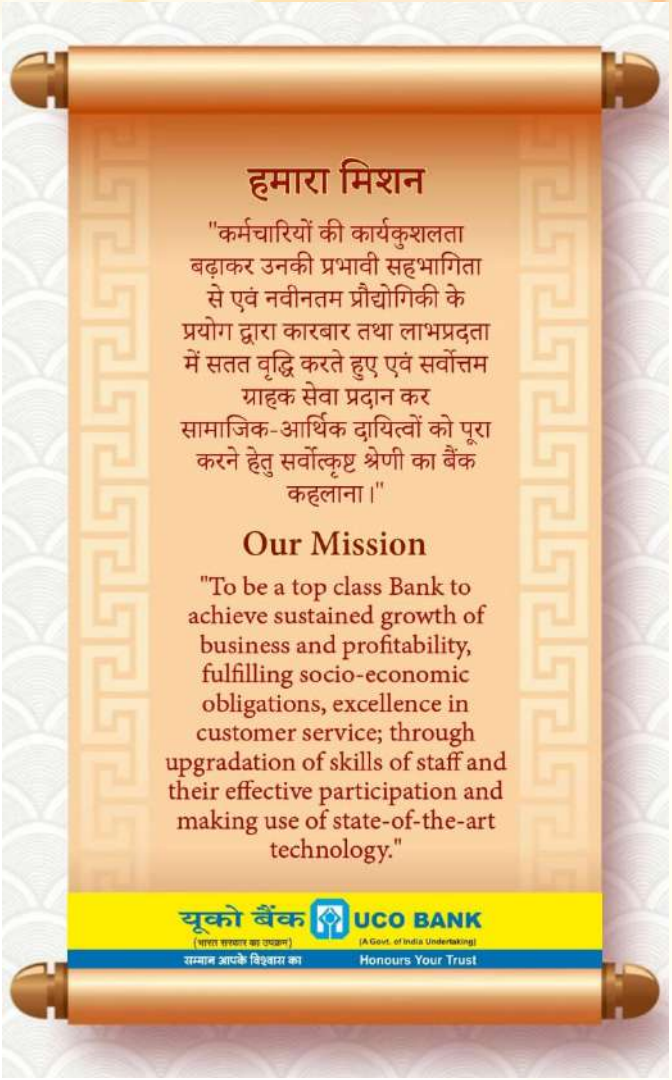

आवरण पृष्ठ के बारे में– लखनऊ की नज़ाकत और नफासत को बयां करते इस आवरण पृष्ठ में लखनऊ की प्रसिद्ध कसीदाकारी ज़रदोज़ी का चित्र अंकित है और पृष्ठभूमि में लखनऊ की मश्हूर चिकनकारी को स्थान दिया गया है। यह दोनों ही कसीदाकारी अपने आप में बेमिसाल और विश्वप्रसिद्ध हैं।

ज़रदोज़ी फारसी मूल की एक अत्यंत जटिल और शाही हस्त-कढ़ाई या कसीदाकारी है। 'ज़रदोज़ी' शब्द फ़ारसी के दो शब्दों-'ज़ार'(सोना) और 'दोज़ी' (कढ़ाई या सिलाई) से मिलकर बना है। जिसका अर्थ है सोने की कढ़ाई। मुगलों के शासन काल में फलीफूली ज़रदोजी के पारंपरिक रूप में असली सोने और चांदी के तारों का उपयोग किया जाता था। वर्तमान में सुनहरी या चांदी की चमक वाले तांबे की तारों का प्रयोग किया जाता है। इसमें धात्विक स्प्रिंग (डबका), मोतियों और सितारों से उपयोग से चित्र में उभरा हुआ प्रभाव उत्पन्न किया जाता है।

मुगलकाल में विशेष रूप से नूरजहां द्वारा प्रोत्साहित चिकनकारी कला आज लखनऊ की एक पहचान है। पारंपरिक रूप से मलमल के कपड़े पर सफेदसूती धागे से यह कढ़ाई की जाती है। इसमें लगभग 32 से 40 विभिन्न प्रकार के टांकों का प्रयोग किया जाता है जिसमें बखिया, टेपची, जाली, घास-पत्ती, फंदा, शेडो, मुर्री आदि टांकें किसी भी लिबास की खूबसूरती में चार चांद लगा देते हैं।

अंचल प्रमुख की कलम से.....

प्रिय साथियों,

नमस्कार,

नए वित्तीय वर्ष 2026-27 की शुरुआत हो चुकी है और हमारे अंचल की पत्रिका 'यूको अवध संदेश' के माध्यम से आपसे संवाद करते हुए मुझे खुशी हो रही है। हमारे अंचल की पत्रिका का नियमित प्रकाशन राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। हम अपने व्यवसायिक लक्ष्यों के साथ ही साथ राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार और इसके लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ हैं। पत्रिका में संकलित विविध लेख, कहानियां, कविताओं आदि में आप सभी की सृजनात्मकता ने मूर्त रूप लिया है। यह देख कर अच्छा लग रहा है।

आज बैंकिंग क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। व्यवसायगत लक्ष्यों को प्राप्त करने के साथ ही साथ हमें ग्राहक सेवा की उत्कृष्टता को बनाए रखना है। तकनीकि क्षेत्र में हो रहे नित नवीन परिवर्तनों को आत्मसात करते हुए आगे बढ़ना है। बैंकिंग के लक्ष्यों की प्राप्ति केवल संख्याओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारी सामूहिक मेहनत, अनुशासन और ग्राहक सेवा की गुणवत्ता का परिणाम है। प्रत्येक शाखा हमारी संस्था का महत्वपूर्ण स्तंभ है और आपकी प्रतिबद्धता ही हमें सफलता की ओर ले जाती है। हमारे लिए समयबद्ध तरीके से कार्य करना आवश्यक है। इसके लिए हमें व्यवसाय के विभिन्न क्षेत्रों में संतुलित प्रगति करनी होगी।

साथियों, विगत वित्तीय वर्ष 2025-26 में हम सभी के सामूहिक प्रयासों से हम व्यवसाय के कुछ मानदंडों को प्राप्त करने में सफल रहे। हमारे अंचल ने कुल व्यवसाय, कुल अग्रिम, कुल जमा, कुल सावधि जमा, बचत, कासा और खुदरा अग्रिम के लक्ष्य प्राप्त किए। आप सभी के सम्मिलित प्रयासों के परिणामस्वरूप ही यह संभव हो पाया है। कुछ मानदंड़ों में हम लक्ष्य प्राप्त करने से चूके भी। हमें वर्तमान वित्तीय वर्ष की प्रथम तिमाही से ही व्यवसाय के सभी मानदंड़ों पर सम्यक् ध्यान देना है और अपने सभी लक्ष्य प्राप्त करने हैं।

मैं आपसे अपेक्षा करता हूँ कि प्रत्येक शाखा अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करे और ग्राहकों के बीच विश्वास का वातावरण बनाए। आपकी मेहनत और समर्पण से ही हम अपने लक्ष्यों को प्राप्त करेंगे और बैंक को नई ऊँचाइयों तक ले जाएँगे। आइए, हम सब मिलकर इस चुनौती को अवसर में बदलें और सफलता की नई कहानी लिखें।

शुभकामनाओ सहित।

आशुतोष सिंह

(आशुतोष सिंह)

उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख

उप अंचल प्रमुख की कलम से.....

प्रिय साथियों,

आप सभी को नमस्ते ,

लखनऊ अंचल में उप अंचल प्रमुख के रूप में कार्यग्रहण कर मुझे खुशी हो रही है। लखनऊ टीम का हिस्सा बनना मेरे लिए सुखद अनुभव है।

कार्यग्रहण के पश्चात हमारे अंचल की पत्रिका 'यूको अवध संदेश' के विगत अंक को देख कर मुझे प्रसन्नता हुई कि हमारे सहकर्मी न केवल अपने व्यवसायिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए समर्पित है अपितु वे अपनी रचनात्मकता को भी अंचल की पत्रिका के माध्यम से सफलतापूर्वक अभिव्यक्त कर रहे हैं। यह पत्रिका केवल हमारे अंचल अथवा बैंक तक ही सीमित नहीं है। इसे गृह मंत्रालय की वेबसाइट के माध्यम से पूरे भारत वर्ष के लोग देख सकते है। यह एक ऐसा मंच है जिसमें हमारी उपलब्धियां भी हैं और हमारे विचार एवं भावों की सुंदर अभिव्यक्ति भी है। मुझे यह भी पता चला कि हमारी इस पत्रिका को नराकास की ओर से गृह पत्रिका की श्रेणी में पिछले वर्ष पुरस्कार प्राप्त हुआ है। हमें इसे बरकरार रखना है।

अब तक आप सभी अपनी शाखाओं में समायोजित हो चुके हैं और निश्चित रूप से ही आप व्यवसायगत लक्ष्यों को प्राप्त करने की रूपरेखा भी बना चुके होंगे। हमें यह अपने ध्यान में हमेशा रखना होगा कि हम व्यवसाय के सभी मानदंडों पर वित्तीय वर्ष के प्रारंभ से ही ध्यान दें। हमारे प्रधान कार्यालय द्वारा चलाए जाने वाले सभी अभियानों में हम सक्रिय सहभागिता करें। बैंक की नई योजनाओं को ग्राहकों तक पहुंचाएं, ग्राहकों के संपर्क में निरंतर रहें। बैंक की डिजीटल यात्रा में, डिजीटल उत्पादों को ग्राहकों तक पहुंचा कर निरंतरता के साथ अपना योगदान दें।अनुपालन के क्षेत्र में भी हम लंबित मामलों से बचें।

मेरा विश्वास है कि आप सभी के एकजुट प्रयासों से हम निश्चित सफलता प्राप्त करेंगे।

शुभकामनाओ सहित।

(नागराज)
उप अंचल प्रमुख

संपादकीय

प्रिय साथियो,

आप सभी को नमस्ते,

हमारे अंचल की पत्रिका का यह अंक राजभाषा हिंदी के प्रति आपकी प्रतिबद्धता को समर्पित है। आपकी सृजनशीलता के विविध रंगों से सराबोर यह पत्रिका संग्रहणीय है। यूको अवध संदेश के इस अंक में न केवल नवीनतम बैंकिंग विषयों से संबंधित विभिन्न लेख ज्ञानवर्धक हैं। आप द्वारा रचित विभिन्न कहानियां, कविताएं और चित्र किसी भी पाठक को पृष्ठ पर रुकने को विवश कर देते हैं। मैं आप सभी को इतनी अच्छी रचनाएं करने के लिए बधाई देती हूं तथा इसकेसाथ ही साथ आशा भी करती हूं कि आप इसी प्रकार से अपने अंचल की पत्रिका को अपना रचनात्मक सहयोग देते रहेंगें।

किसी भी संगठन में स्टाफ का परस्पर सहयोग और समूह भावना ही सभी कार्यों को सफलता से करने के लिए अनिवार्यता होती है। चाहे हमारी शाखाओं को आवंटित व्यवसाय से संबंधित लक्ष्य हों अथवा राजभाषा हिंदी से जुड़े हुए कार्य। हमारी यह पत्रिका नराकास लखनऊ द्वारा पुरस्कृत पत्रिका है। आप सभी का सहयोग ही हमारी पत्रिका को उत्कृष्टता प्रदान करता है। हिंदी भाषा में लोगों को आपस में जोड़ने की अनूठी शक्ति है, इसका व्याकरण ध्वनात्मकता पर आधारित है। अन्य भाषाओं के शब्दों को आत्मसात करने की प्रवृत्ति इसे विश्व भाषा के आसन पर विराजमान करती है। हम सभी को गर्व है कि हमें भारतभूमि में जन्म मिला और हमारी संस्कृति को प्रतिबिम्बित करने वाली हिंदी हमारी भाषा है।

आइए हम संकल्प लें कि हम राजभाषा हिंदी में अपना अधिक से अधिक कार्य करेंगे और हिंदी के प्रगामी प्रयोग में सहायक होंगे।

शुभकामनाओ सहित।

(डॉ शिल्पी शुक्ला)

मुख्य प्रबंधक राजभाषा

बैंकों में पूर्व चेतावनी प्रणाली (ईडब्ल्यूएस) की उपयोगिता

श्री निमेश दीप

सहायक महाप्रबंधक

अंचल कार्यालय लखनऊ

बैंकों में पूर्व चेतावनी प्रणाली एक सुरक्षा कवच की तरह काम करती है। भारतीय बैंकिंग प्रणाली में बढ़ते जोखिम, धोखाधड़ी, अनियमितताओं और बढ़ते अनिष्पादित ऋण खातों की चुनौती को देखते हुए भारतीय रिजर्व बैंक ने 2016 में पूर्व चेतावनी प्रणाली (ईडब्ल्यूएस) की अवधारणा को औपचारिक रूप दिया। इसका उद्देश्य है—किसी भी ऋण खाते में संभावित जोखिम को प्रारंभिक अवस्था में पहचानना है, ताकि बैंक समय रहते सुधारात्मक कदम उठा सके।

आज के समय में ईडब्ल्यूएस केवल एक तकनीकी प्रणाली नहीं, बल्कि बैंकिंग का जीवन रक्षक तंत्र है, जो बैंक को संभावित नुकसान, धोखाधड़ी और अनिष्पादित ऋण खातों को बढ़ने से रोकथाम करता है।

पूर्व चेतावनी प्रणाली-

पूर्व चेतावनी प्रणाली ऐसे संकेतों का समूह है जो यह दर्शाते हैं कि किसी उधारकर्ता के खाते में वित्तीय अनुशासन कमजोर हो रहा है। भारतीय रिजर्व बैंक ने इस संबंध में 42 संकेतों की सूची जारी की है, जबकि वित्तीय सेवा विभाग (ईज़ एजेंडा) ने 84 संकेतों को शामिल किया है। भारतीय रिजर्व बैंक के फ्रॉड रिस्क मैनेजमेंट नियमों के अनुसार भारत में बैंकिंग व्यवस्था के लिए पूर्व चेतावनी प्रणाली फ्रेमवर्क अनिवार्य कर दिया गया है।

यूको बैंक का ईडब्ल्यूएस सिस्टम इन सभी संकेतों को दैनिक आधार पर मॉनिटर करता है और किसी भी अनियमितता पर "अलर्ट" या संकेत उत्पन्न करता है।

यह प्रणाली मुख्य रूप से चार चरणों में काम करती है:

- **डेटा एकत्रीकरण :** यह बैंक के आंतरिक डेटा (खाता शेष , लेन-देन) और बाहरी डेटा (क्रेडिट ब्यूरो रिपोर्ट ,कानूनी मामले ,बाजार समाचार) को लगातार ट्रैक करती है और कार्रवाई के लिए अपना डेटाबेस तैयार करती है।
- **ट्रिगर और अलर्ट :** जब भी किसी खाते में कोई संदिग्ध गतिविधि या वित्तीय गिरावट दिखती है ,तो सिस्टम तुरंत अलर्ट जेनरेट करता है।
- **खातों का रेड-फ्लैगिंग :** यदि किसी खाते में गंभीर वित्तीय जोखिम या धोखाधड़ी की आशंका (Suspicion) होती है , तो उसे रेड फ्लैग्ड अकाउंट घोषित किया जाता है।

पूर्व चेतावनी प्रणाली केवल अनिष्पादित ऋण खातों से संबंधित संकेत ही जारी नहीं करती है अपितु इसमें वित्तीय संकेतकों के साथ ही साथ गैर वित्तीय संकेतक भी सम्मिलित हैं। जिससे सभी खातों की मॉनीटरिंग संभव होती है। यह बैंक को शुरुआती स्तर पर ही चेतावनी देता है, जिससे बड़े नुकसान से बचा जा सकता है।

पूर्व चेतावनी प्रणाली में निम्न अलर्ट/संकेत जारी किए जाते हैं-

लेन-देन संकेतक -लगातार चेक बाउंस होना ,अचानक बड़े कैश विड्रॉल ,या खातों से संदिग्ध फंड ट्रांसफर।

वित्तीय संकेतक- बिक्री या मुनाफे में लगातार गिरावट ,वर्किंग कैपिटल की कमी ,और नकदी का संकट।

गैर-वित्तीय/प्रबंधन- प्रमोटरों या शीर्ष प्रबंधन का अचानक नौकरी छोड़ना ,या फैक्टरी/ऑफिस का बार-बार बंद होना।

बाहरी बाजार- संबंधित उद्योग में मंदी आना ,या कंपनी पर कोई बड़ा अदालती केस होना।

सुधारात्मक कार्रवाई : अलर्ट/संकेत मिलने के बाद बैंक एहतयाती उपाय अपनाते हैं। ऋण वसूली प्रक्रिया तेज कर सकते हैं ,अतिरिक्त जमानत मांग सकते हैं या कानूनी कदम उठा सकते हैं। **क्रेडिट और डिजिटल लेन-देन दोनों पर नजर :**अब बैंक सिर्फ बड़े लोन खातों पर ही नहीं ,बल्कि डिजिटल और नॉन-क्रेडिट लेन-देन पर भी ईडब्ल्यूएस लागू करते हैं ताकि ऑनलाइन धोखाधड़ी पकड़ी जा सके।

कोर बैंकिंग से एकीकरण :बैंकों को अपने ईडब्ल्यूएस सिस्टम को मुख्य सॉफ्टवेयर (कोर बैंकिंग साल्यूशन) से जोड़ना होता है तुरंत अलर्ट मिल सके।

समय सीमा :किसी खाते के रेड-फ्लैग होने के बाद बैंक को एक निश्चित समय के भीतर उसकी फोरेंसिक जांच पूरी कर फ्रॉड का निर्धारण करना होता है।

अलर्ट मिलने के बाद बैंकों द्वारा की जाने वाली कानूनी कार्रवाई

- **लुकआउट सर्कुलर :** यदि प्रमोटर या लोन लेने वाले व्यक्ति के देश छोड़कर भागने की आशंका हो, तो बैंक गृह मंत्रालय के माध्यम से तुरंत एलओसी जारी करवाते हैं ताकि उन्हें एयरपोर्ट पर ही रोका जा सके।
- **कानूनी जांच एजेंसियों को रिपोर्ट :** धोखाधड़ी की पुष्टि होने पर बैंक मामले को तुरंत **सीबीआई** , **प्रवर्तन निदेशालय** या स्थानीय पुलिस की आर्थिक अपराध शाखा (EOW) को सौंप देते हैं।
- **खातों को फ्रीज करना:** संदिग्ध पैसे की हेराफेरी रोकने के लिए संबंधित कंपनी और उसके प्रमोटरों के बैंक खातों को तुरंत फ्रीज या ब्लॉक कर दिया जाता है।
- **सरफेसी एक्ट 2002:** यदि खाता अनिष्पादित होने वाला है, तो बैंक इस कानून के तहत अदालत जाए बिना ही गिरवी रखी गई संपत्ति (Collateral) को जब्त करने और उसकी नीलामी करने की प्रक्रिया शुरू कर देते हैं।
- **इन्सॉल्वेंसी प्रक्रिया:** कॉर्पोरेट लोन के मामलों में बैंक नेशनल कंपनी लॉ ट्रिब्यूनल का रुख करते हैं ताकि कंपनी की संपत्तियों को बेचकर रिकवरी की जा सके।

कारण बताओ नोटिस : सुप्रीम कोर्ट और RBI के नियमों के मुताबिक, किसी भी खाते को आधिकारिक तौर पर 'फ्रॉड' घोषित करने से पहले बैंक को उधारकर्ता को **21 दिनों का समय** देना होता है ताकि वह अपना पक्ष रख सके।

पूर्व चेतावनी प्रणाली **की उपयोगिता-**

(i) धोखाधड़ी रोकथाम

आरबीआई ने स्पष्ट किया है कि पूर्व चेतावनी प्रणाली संभावित फ्राड खातों को शुरुआती स्तर पर पहचानने में मदद करता है।

(ii) एसएमए बनने से पहले जोखिम पहचान

अक्सर खाते एसएमए-0/1/2 बनने से पहले ही संकेत दिखाते हैं।

ईडब्ल्यूएस इन्हीं संकेतों को पकड़कर शाखा को चेतावनी देता है।

(iii) ऋण जोखिम + फ्राड जोखिम का संयुक्त मूल्यांकन

पूर्व चेतवनी प्रणाली को **ऋण निगरानी प्रक्रिया** में एकीकृत किया गया है ताकि यह निरंतर गतिविधि बनी रहे।

(iv) समयबद्ध कार्रवाई इस प्रणाली में समयबद्धरूप से कार्रवाई सुनिश्चित की जाती है और उसका समुचित रिकार्ड भी रखा जाता है।

- कम जोखिम अलर्ट → **T+2 दिन**
- उच्च जोखिम अलर्ट → **शाखा: T+1**, अंका **T+2**
- जांच के मामले में → **अधिकतम 7 दिन**

पहले वित्तीय समीक्षा साल में एक बार होती थी, लेकिन आज एजेंटिक एआई और मशीन लर्निंग आधारित प्रणालियां 24x7 वास्तविक समय में काम करती हैं। ये तकनीकें इंसानी नजरों से बचने वाली सूक्ष्म विसंगतियों को भी पकड़ लेती हैं और बैंक को आगाह करती हैं। आज प्रत्येक बैंक में पूर्व चेतावनी प्रणाली अनिवार्य है।

दैनिक बैंकिंग गतिविधियों में ईडब्ल्यूएस का उपयोग शाखा को सतर्क, अनुशासित और जोखिम मुक्त संचालन की दिशा में अग्रसर करता है। इसलिए हर शाखा प्रमुख , उप शाखा प्रमुख , ऋण अधिकारी के लिए ईडब्ल्यूएस एलर्ट का समयबद्ध निस्तारण अत्यंत आवश्यक है।

तकनीकी नवाचार—फिनटेक

श्री मनीष कुमार

सहायक प्रबंधक

एमसीयू गोमतीनगर शाखा

भारत ने एशिया के शीर्ष वित्तीय प्रौद्योगिकी (फिनटेक) बाजार के रूप में चीन को पछाड़ दिया है। चीन को पीछे छोड़ते दूसरे सबसे बड़े फिनटेक हब (अमेरिका के बाद) के रूप में उभरने के बाद भारत एशिया में फिनटेक के सबसे बड़े बाज़ार के रूप में उभरा है। वर्तमान समय में फिनटेक अर्थव्यवस्था के सबसे अधिक संपन्न क्षेत्रों (व्यापार वृद्धि और रोज़गार सृजन दोनों मामलों में) में से एक है। फिनटेक में बीमा, निवेश, प्रेषण जैसी अन्य वित्तीय सेवाओं में व्यापक बदलाव लाने की क्षमता है।

फिनटेक

फिनटेक शब्द 'वित्तीय प्रौद्योगिकी का एक संयोजन है। वित्तीय कार्यों में प्रौद्योगिकी के उपयोग को फिनटेक कहा जाता है। दूसरे शब्दों में यह पारंपरिक वित्तीय सेवाओं और विभिन्न कंपनियों तथा व्यापार में वित्तीय पहलुओं के प्रबंधन में आधुनिक तकनीक का कार्यान्वयन है। फिनटेक शब्द का प्रयोग उन नई तकनीकों के संदर्भ में किया जाता है, जिनके माध्यम से वित्तीय सेवाओं का प्रयोग, इसमें सुधार और स्वायत्तता लाने का प्रयास किया जाता है। फिनटेक तकनीकी रूप से सक्षम एक वित्तीय नवाचार है. जो नए व्यापार मॉडलों, अनुप्रयोगों, प्रक्रियाओं या ऐसे समान प्रभाव वाले उत्पादों के रूप में वित्तीय बाज़ारों, संस्थानों और वित्तीय सेवाओं को प्रभावित करता है।

वित्तीय प्रौद्योगिकी (फिनटेक) नई तकनीक का वर्णन करती है जो वित्तीय सेवाओं के वितरण और उपयोग को बढ़ाने और स्वचालित करने की दिशा में काम करती है। वर्तमान में फिनटेक के तहत कई अलग-अलग क्षेत्र और उद्योग जैसे शिक्षा, खुदरा बैंकिंग, निधि जुटाना और गैर-लाभकारी कार्य, निवेश प्रबंधन आदि भी शामिल किये जाते हैं।

फिनटेक संबंधित तथ्यः

4 जनवरी, 2022 को भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) द्वारा एक आंतरिक फिनटेक विभाग की स्थापना की गई है। इस विभाग की स्थापना भारत में गतिशील रूप से बदलते वित्तीय परिदृश्य पर ध्यान केंद्रित करने हेतु की गई है।

फिनटेक विभाग का उद्देश्य फिनटेक नवाचार पर जोर देना, विनियमन क्षेत्र में नवाचार को बढ़ावा देना, इस क्षेत्र से जुड़ी चुनौतियों और अवसरों की पहचान करने के साथ-साथ ऐसी चुनौतियों का समाधान करना है।

जून, 2018 में भारतीय रिजर्व बैंक की वरिष्ठ प्रबंधन समिति की एक बैठक के परिणामस्वरूप विनिमय विभाग में एक फिनटेक इकाई का निर्माण हुआ था।

वर्ष 2019 में भारतीय रिजर्व बैंक ने एक नियामक सेंडबॉक्स के लिए रूपरेखा जारी की।

भारतीय रिजर्व बैंक की भूमिकाः

फिनटेक के बढ़ते प्रभाव को देखकर, भारतीय रिजर्व बैंक भी उपभोक्ताओं के बीच फिनटेक को बढ़ावा देने के लिए कदम उठा रहा है। कार्ड के माध्यम से डिजिटल भुगतान की कमियों को दूर करने के लिये भारतीय रिजर्व बैंक ने 'कार्ड टोकनाइजेशन तकनीक को लागू किया है। भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम द्वारा विकसित 'असंरचनात्मक पूरक सेवा डाटा (यूएसएसडी), इंटरनेट की आवश्यकता के बिना मोबाइल फोन से बैंकिंग सेवाओं तक पहुँच प्रदान करता है।

इसकी मदद से वित्तीय समावेशन की संकल्पना को भी साकार किया जा रहा है।

आधार कार्ड और जनधन खातों की मदद से फिनटेक के विकास को बल मिला है। अगस्त 2021 तक देश में 43 करोड़ से अधिक जनधन खाते खुल चुके थे। देश में 1.2 बिलियन से अधिक स्मार्टफोन का इजाफा हो रहा है। अब ऑटोमेटेड टेलर मशीन (एटीएम) का चलन कम हो गया है और इसकी जगह लोग यूपीआई का इस्तेमाल कर रहे हैं।

भारतीय रिजर्व बैंक, फिनटेक कंपनियों से जुड़े जोखिमों से अनजान नहीं है। फिनटेक कंपनियों को नियंत्रित करने के लिए केंद्रीय बैंक, "विनियामक सैंडबॉक्स को सामने लेकर आने वाला है। यह एक ऐसा उपाय है, जिसकी मदद से किसी नई प्रौद्योगिकी को अमल में लाने से पहले नियामक की देख-रेख में उसके इस्तेमाल के तरीके को सीखा जा सकता है। "विनियामक सैंडबॉक्स फिनटेक कंपनियों को कम लागत पर नवोन्मेषी उत्पादों को पेश करने में भी मदद करेगा।

इससे वितीय उत्पादों की लागत कम होगी, वित्तीय सेवाओं तक आम लोगों की पहुंच बढ़ेगी और वितीय उत्पादों की गुणवत्ता बढ़ेगी। इसी वजह से केंद्रीय बैंक, फिनटेक कंपनियों के साथ मिलकर काम करने के लिये बैंकों को प्रोत्साहित कर रहा है। रिजर्व बैंक यह भी चाहता है कि फिनटेक कंपनियों की क्षमता का समुचित दोहन करने के लिये इस क्षेत्र में निवेश के प्रवाह को हर स्तर पर सुनिश्चित किया जाये। साथ ही, फिनटेक कंपनियों और बैंकों के बीच करारनामा की संख्या को बढ़ाने के लिए एक समीचीन पारिस्थितिकी को विकसित करने और उसकी निगरानी करने की भी जरुरत है।

रिजर्व बैंक के गवर्नर शक्ति कांत दास के अनुसार देश में फिनटेक को अपनाने की दर लगभग 52 प्रतिशत है। देश में इस वक्त 1,218 फिनटेक कंपनियों का परिचालन किया जा रहा है। आज फिनटेक, देश में निवेश को बढ़ाने के साथ-साथ बड़ी संख्या में रोजगार के अवसरों को सृजित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। ऐसे में यह कहना सही होगा कि फिनटेक के इस्तेमाल को बढ़ावा देना समय की मांग है। इसकी मदद से वितीय लेनदेन को आसान बनाया जा सकता है। हालाँकि, इसके समक्ष कुछ चुनौतियों भी हैं, लेकिन सरकार के नेतृत्व में भारतीय रिजर्व बैंक इसके राह के काटों को हटाने की लगातार कोशिश कर रहा है।

फिनटेक विभाग के कार्य:

यह विभाग फिनटेक विषय पर गहन शोध के लिये एक फ्रेमवर्क प्रदान करेगा। यह फिनटेक क्षेत्र में नवाचार को बढ़ावा देगा तथा इससे जुड़ी चुनौतियों एवं अवसरों की पहचान कर उन्हें संबोधित करेगा। प्रमुख वित्तीय संस्थानों व बैंक के दायरे में आने वाले फिनटेक संबंधी कार्यों में नवाचारों को बढ़ावा देने वाले सभी मामले, फिनटेक विभाग के माध्यम से निपटाए जाएंगे।

फिनटेक नवोन्मेष के सक्रिय क्षेत्र

क्रिप्टोकरेंसी और डिजिटल कैश।

ब्लॉकचेन तकनीकः इसके तहत किसी केंद्रीय बहीखाते की बजाय कंप्यूटर नेटवर्क पर लेन-देन के रिकॉर्ड को सुरक्षित रखा जाता है। फिनटेक में बीमा, निवेश, प्रेषण जैसी अन्य वित्तीय सेवाओं में व्यापक बदलाव लाने की क्षमता है। उपयुक्त डेटा की पहचान और शेयर करने और सरकारी विभागों को विश्व-स्तरीय ब्लॉकचेन सेवाएं प्रदान करने के लिए बेंगलुरु में ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी में उत्कृष्टता केंद्र (सीओई) शुरू किया गया था।

ओपन बैंकिंगः ओपन बैंकिंग एक ऐसी प्रणाली है जिसके तहत बैंक नए एप्लीकेशन और सेवाओं को विकसित करने हेतु तीसरे पक्ष को अपने एप्लीकेशन प्रोग्रामिंग इंटरफेस की सुविधा प्रदान करते हैं। ओपन बैंकिंग के तहत कार्यरत बैंकों को फिनटेक के साथ प्रतिस्पर्द्धा की बजाय साझेदारी करने का अवसर प्रदान किया जाता है।

इंश्योर टेकः इसके तहत प्रौद्योगिकी के उपयोग के माध्यम से बीमा उद्योग को सरल और कारगर बनाने का प्रयास किया जाता है।

रेगटेकः रेग टेक, रेगुलेटरी टेक्नोलॉजी का संक्षिप्त रूप है। इसका उपयोग व्यवसायों को कुशलतापूर्वक और किफायती तरीके से औद्योगिक क्षेत्र के नियमों का पालन करने में सहायता के लिये किया जाता है।

साइबर सुरक्षाः देश में साइबर हमलों के मामलों में वृद्धि और विकेंद्रीकृत डेटा के कारण फिनटेक तथा साइबर सुरक्षा के मुद्दे एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।

भारत में फिनटेक के विकास के प्रमुख घटकः

- व्यापक पहचान औपचारीकरण (आधार के माध्यम से): 1.2 बिलियन नामांकन।
- जन धन योजना जैसे प्रयासों के माध्यम से बैंकिंग पहुँच में वृद्धिः 1 बिलियन से अधिक बैंक खाते।
- व्यापक स्मार्टफोन पहुँचः 1.2 बिलियन से अधिक स्मार्टफोन उपभोक्ता।
- भारत में व्यय योग्य आय में वृद्धि।
- इंडिया स्टैकः व्यवसायों और स्टार्टअप्स के लिए एपीआई का सेंट।

- यूपीआई और डिजिटल इंडिया जैसी प्रमुख सरकारी पहल।
- भारत सरकार द्वारा यूपीआई और डिजिटल इंडिया जैसे प्रमुख प्रयास।

मध्यम वर्ग का व्यापक विस्तारः वर्ष 2030 तक भारत की मध्यम वर्गीय आबादी में 140 मिलियन नए परिवार और उच्च-आय वर्ग की आबादी में 21 मिलियन नए परिवार जुड़ जाएंगे, जो देश के फिनटेक बाज़ार में मांग और विकास को गति प्रदान करेंगे।

एमएसएमई और फिनटेकः

देश में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) के अस्तित्व को कायम रखने के लिए बहुत ज्यादा पूँजी की जरुरत है। अंतरराष्ट्रीय वित्त निगम की एक रिपोर्ट के अनुसार, एमएसएमई क्षेत्र में आवश्यकता और उपलब्ध पूंजी का अंतर लगभग 397.5 अरब डॉलर है।

फिनटेक स्टार्टअप के माध्यम से आज एमएसएमई कारोबारियों को आसान तरीके से यानी बिना कागजी झंझट के ऋण उपलब्ध कराये जा रहे हैं। फिनटेक स्टार्टअप्स से बैंकिंग कामकाज में पारदर्शिता भी आ रही है। बैंक फिनटेक के महत्व को अच्छी तरह से समझ चुके हैं। बैंकों का ग्राहक आधार निरंतर व्यापक हो रहा है। बैंक, फिनटेक स्टार्टअप्स की मदद से वैसे ग्राहकों तक भी पहुंच रहे हैं, जिन्हें पहले बैंक अपनी सेवायें नहीं दे पा रहे थे। फिनटेक कंपनियों की मदद से बैंक ग्राहकों को बचत एवं चालू खाता खोलने के साथ-साथ ऑनलाइन ऋण की भी सुविधा उपलब्ध करा रहे हैं। फिनटेक कंपनियों की मदद से बैंकों का जमा और ऋण कारोबार भी बढ़ रहा है।

फिनटेक से जुड़ी संभावनाएँ:

व्यापक वित्तीय समावेशनः वर्तमान में भी देश की एक बड़ी आबादी औपचारिक वित्तीय प्रणाली के दायरे से बाहर है। वित्तीय प्रौद्योगिकियों के प्रयोग के माध्यम से पारंपरिक वित्तीय और बैंकिंग मॉडल में वित्तीय समावेशन से जुड़ी चुनौतियों को दूर किया जा सकता है।

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों को वित्तीय सहायता प्रदान करनाः वर्तमान में देश में सक्रिय 'सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों के अस्तित्व के लिये पूंजी का अभाव सबसे बड़ा खतरा बना हुआ है। ऐसे में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों के क्षेत्र में फिनटेक का महत्त्व बढ़ जाता है, जिसमें इस क्षेत्र में पूंजी की कमी को दूर करने की क्षमता भी है।

ग्राहक अनुभव और पारदर्शिता में सुधार फिनटेक स्टार्टअप सहूलियत, पारदर्शिता, व्यक्तिगत और व्यापक पहुँच तथा उपयोग में सुलभता जैसी महत्त्वपूर्ण सुविधाएँ प्रदान करते हैं, जो ग्राहकों को सशक्त बनाने में सहायता करते हैं। फिनटेक उद्योग द्वारा जोखिमों के आकलन के लिये अद्वितीय और नवीन मॉडल का विकास किया जाएगा।

आत्मनिर्भर भारत, वोकल फोर लोकल और मेक इन इंडिया जैसी योजनाओं का फिनटेक के माध्यम से वित्त पोषण किया जा सकता है।बीमा और बैंकिंग जैसी वित्तीय प्रणालियों को दूरदराज और ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंचाना।

एक तरफ फिनटेक कंपनियों से बैंकिंग क्षेत्र को लाभ हो रहा है तो दूसरी तरफ इनकी चुनौतियों भी हैं। अस्तु, ग्राहकों को डिजिटल उत्पादों के इस्तेमाल करने के क्रम में बहुत ही ज्यादा सावधान रहने की जरुरत है। बाजार में कई फिनटेक कंपनियां एप के जरिये ऋण की सुविधा दे रही हैं, लेकिन इस तरह अस्तु के ऋण लेने से पहले ग्राहकों को सबसे पहले फिनटेक कंपनी के साख की जाँच करने की जरुरत है. मसलन, क्या फिनटेक कंपनी भारतीय रिजर्व बैंक में पंजीकृत है या नहीं, फिनटेक कंपनियों की रेटिंग देखने की भी जरुरत है, ताकि गलत कंपनी से ऋण लेकर ग्राहक ठगी का शिकार नहीं हों।

भारत में फिनटेक सेक्टर में चुनौतियाँ:

साइबर हमलेः प्रक्रियाओं का स्वचालन और डेटा का डिजिटलीकरण फिनटेक प्रणाली को हैकरों के हमलों के प्रति सुभेद्य बनाता है।

डेटा गोपनीयता की समस्याः उपभोक्ताओं के लिये साइबर हमलों के साथ-साथ महत्त्वपूर्ण व्यक्तिगत और वित्तीय डेटा का दुरुपयोग भी एक बड़ी चिंता का कारण है।

विनियमन में कठिनाईः वर्तमान समय में तेज़ी से उभरते फिनटेक क्षेत्र (विशेष रूप से क्रिप्टोकरेंसी) का विनियमन भी एक बड़ी समस्या है। वर्तमान में विश्व के अधिकांश देशों में फिनटेक के विनियमन हेतु कोई विशेष प्रावधान नहीं हैं, ऐसे में विनियमन के इस अभाव ने इस क्षेत्र में घोटाले और धोखाधड़ी की घटनाओं को बढ़ावा दिया है।

नियमन में कठिनाई फिनटेक दिग्गजों द्वारा एकत्र किए गए डेटा को अक्सर लागत कुशल क्लाउड सर्वर की उपलब्धता के कारण विदेशों में संग्रहीत किया जाता है। यह स्रोत देश में विनियमन को कठिन बनाता है उदा। डेटा स्थानीयकरण के साथ, आरबीआई का लक्ष्य देश की भौगोलिक सीमाओं के बाहर सर्वर पर डेटा को प्रतिबंधित करके नागरिकों के व्यक्तिगत डेटा की रक्षा करना है।

फिनटेक द्वारा दी जाने वाली सेवाओं की विविधता के कारण इस क्षेत्र की समस्याओं के लिये कोई एकल और व्यापक समाधान तैयार करना बहुत ही कठिन है।

- ज़रूरी कैपिटल जुटाना और इंटरनेट की कम समझ।
- भारतीय ग्रामीण आबादी तक इस प्रकार की सूचनाओं की पहुंच की कमी।
- ग्राहकों की ऑनलाइन सर्विसेज़ को लेकर अविश्वास की भावना।

इन चुनौतियों के बावजूद, फिनटेक इंडस्ट्री धीरे-धीरे फलफूल रही है। हालांकि इसको मिल रही चुनौतियां इसके विकास की गति को धीमा कर रही हैं, लेकिन इसका विकास निरंतर जारी है।

फिनटेक का बाज़ार

जब 21 वीं सदी में फिनटेक का उदय हुआ, तो यह शब्द शुरू में मशहूर वित्तीय संस्थान के बैक-एंड सिस्टम में काम में आने वाली तकनीकी पर लागू किया गया था। इंटरनेट की क्रांति और मोबाइल इंटरनेट/स्मार्टफोन क्रांति के बाद से यह तकनीकी विस्फोटक रूप से बढ़ी है, और फिनटेक, जिसे शुरुआत में बैंकों या कमर्शियल फर्मों के बैंक ऑफिस से जोड़कर देखा जाता था, अब व्यक्तिगत रूप से विस्तृत विविधता का वर्णन करती है। रिसर्च और मार्केट की रिपोर्ट के मुताबिक, 2016 में दुनियाभर की फिनटेक उद्योग के बाजार का आकार 2,767.01 बिलियन डॉलर था, और 2026 तक 31,503.54 बिलियन डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है। वहीं, अगर हम भारत के फिनटेक उद्योग के बाजार के आकार की बात करें तो, इन्वेस्ट इंडिया की रिपोर्ट के आंकड़े काफी रोचक है। भारत दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ते फिनटेक बाजारों में से एक है और भारत में लगभग 6,636 फिनटेक स्टार्टअप हैं।

फिनटेक यूजर्स फिनटेक इंडस्ट्री में यूजर्स को चार श्रेणी में बांटा गया हैं:

1) बैंकों के लिए बी 2 बी

2) बैंकों के वाणिज्यिक ग्राहक

3) स्मॉल बिजनेस के लिए बी 2 सी

4) उपभोक्ता ।

अतः हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं फिनटेक कंपनियां देश में वित्तीय समावेशन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। फिनटेक में संभावना है कि यह भारत में वित्तीय सेवाओं और वित्तीय समावेशन के परिदृश्य को मौलिक रूप से नई शक्ल प्रदान कर सकता है। वहीं बायोकैच के कंट्री हेड विक्रम गिडवानी ने कहा कि भारतीय बैंकिंग और फिनटेक उद्योग एक बड़ी डिजिटल क्रांति के बीच में है। वर्तमान समय की ज़रूरतों के अनुरूप फिनटेक भारतीय आर्थिक क्षेत्र में व्याप्त चुनौतियों के लियेउपयुक्त समाधान उपलब्ध कराते हैं। हालोंकि इस क्षेत्र में विनियम के दौरान इस बात पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये कि ऐसा कोई भी प्रयास इसके विकास में सहायक होना चाहिये न कि बाधक।

भारत मोबाइल और इंटरनेट के तेजी से विस्तार के साथ सबसे बड़े डिजिटल बाजारों में से एक बनने की ओर अग्रसर है। फिनटेक कंपनियां देश में वित्तीय समावेशन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

हिंदी कार्यशाला

जनवरी-मार्च 2025-26 एवं अक्तूबर-दिसंबर 2025 तिमाही की हिंदी कार्यशाला दिनांक 18.03.2026 एवं 26.12.2025 को आयोजित की गई । कार्यशाला का उद्घाटन उप अंचल प्रमुख श्रीमती निकीता पाण्डेय ने किया उन्होंने सभी प्रतिभागियों को हिंदी में अधिक से अधिक काम करने को कहा। उप अंचल प्रमुख महोदया ने प्रतिभागियों को समय से हिंदी प्रगति रिपोर्ट एसएसओ में अपलोड करने के लिए भी कहा।

कार्यशाला में राजभाषा के संदर्भ में शाखा प्रबंधकों के संवैधानिक उत्तरदायित्वों के बारे में बताया गया। प्रतिभागियों को राजभाषा नियम-अधिनियमों की जानकारी दी गई। हिंदी प्रगति रिपोर्ट भरते समय ध्यान रखने योग्य महत्वपूर्ण बातों के बारे में जानकारी दी गई। कम्प्यूटर पर कोपाइलट, अनुवादिनी, भाषिणी आदि का प्रयोग कर के किस प्रकार से हम हिंदी में काम-काज को बढ़ा सकते हैं इसकी विस्तृत जानकारी प्रायोगिक रूप से दी गई। शाखा के आंतरिक कामकाज में हिंदी के प्रयोग को किस प्रकार से बढ़ाया जा सकता है इस पर भी प्रतिभागियों को जानकारी दी गई। प्रतिभागियों को यूनीकोड के उपयोग के विषय में भी बताया गया और उन्हें बैंक की हिंदी पत्राचार प्रोत्साहन योजना में प्रविष्टि भेजने के लिए स्मरण दिलाया गया।

मैं एक कामकाजी माँ हूँ

श्रीमती गायत्री देवी
वरिष्ठ प्रबंधक
खुदरा ऋण हब लखनऊ

सुबह की पहली हलचल संग,
मेरी आँखें खुल जाती हैं,
सपनों से पहले
ज़िम्मेदारियाँ दरवाज़े पर आ जाती हैं।
रसोई में जलते चूल्हे संग,
दिन मेरा मुस्काता है
,बच्चों की छोटी ख्वाहिश में,
मेरा संसार समाता है।
कभी टिफ़िन, कभी किताबें,
कभी उनकी छोटी फरमाइश,
इन सबके बीच कहीं,
छुप जाती मेरे मन की,
हर एक ख्वाहिश।
जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाकर,
ऑफ़िस की राह पकड़ती हूँ,
घर की चिंता दिल में लेकर,
दुनिया से भी लड़ती हूँ।
चेहरे पर मुस्कान सजाकर,
हर मुश्किल को सहती हूँ,
कभी समय से हार भी जाऊँ,
फिर भी आगे बढ़ती हूँ।
मीटिंग, काम और जिम्मेदारी,
दिनभर मुझे बुलाते हैं,
पर बच्चों की मीठी बातें,
हर थकान भुलाते हैं।
दोपहर की भागदौड़ में भी,
दिल घर में रह जाता है,

"माँ कब आओगी?"
सुन कर मन थोड़ा भर आता है।
शाम ढले जब घर लौटूँ,
थकी हुई सी लगती हूँ,
पर बच्चों की एक मुस्कान से,
फिर से जी उठती हूँ।
उनके संग हँसना-गाना,
होमवर्क और छोटी बातें,
इन्हीं पलों में छुपी हुई हैं,
मेरी सारी सौगातें।
कभी खुद को भूल भी जाऊँ,
कभी अपने सपने टालूँ,
पर बच्चों की खुशियों खातिर,
हर मुश्किल को मैं पालूँ।
हाँ, कभी आँखें नम होती हैं,
कभी मन थोड़ा थक जाता,
पर बच्चों का माथा चूमूँ, तो
हर दुख पीछे रह जाता।
मैं सिर्फ़ घर की औरत नहीं,
अपने सपनों की उड़ान भी हूँ,
अपने बच्चों की ताक़त हूँ,
पर खुद की पहचान भी हूँ।
मैं एक कामकाजी माँ हूँ,
हर दिन नई कहानी हूँ,
संघर्षों की धूप में खिलती,
हिम्मत की निशानी हूँ।
थकती हूँ, पर रुकती नहीं,
हर दिन उम्मीद जगाती हूँ,
अपने बच्चों के उज्ज्वल कल के लिए,
खुद को हर रोज़ बनाती हूँ।

कलाकृति

-श्रीमती गायत्री देवी

यूको बैंक जी.डी.बिड़ला व्याख्यानमाला 2025-26

यूको डॉ.अमिता दुबे को सम्मानित करते हुए अंचल प्रमुख श्री आशुतोष सिंह

www.toi.in/psu

generation performance. Sanjiv Kumar Saha, project director, highlighted initiatives in fly ash utilisation, carbon capture and environmental conservation. He also noted stable coal supply from Northern Coalfields and ongoing efforts to improve operational efficiency and sustainability.

UCO Bank conducts Rajbhasha programme

UCO Bank, zonal office, Lucknow, organised 'UCO Bank GD Birla Vyakhyanmala' and 'UCO Rajbhaya Samman' under the Rajbhaya Action Plan 2025-26. The theme of the Vyakhyanmala was 'Hindi Language -Journey from Literature to Business'.

Amita Dube, chief editor, Uttar Pradesh Hindi Sansthan, was the chief guest and speaker. Ashutosh Singh, zonal head, UCO Bank, Lucknow zone, informed everyone about the employment-oriented form of the Hindi language. Dube highlighted the promotion of the Hindi language as a business language in the Vyakhyanmala.

Two students, Aradhana Mishra and Shashank Pandey, who secured the highest marks in the postgraduate Hindi examination 2024-25 of the hindi and modern indian language department of Lucknow University, were given the 'UCO Rajbhaya Samman'. The programme was conducted by Shilpi Shukla, senior manager, Rajbhaya, and the vote of thanks was given by Alok Kumar, assistant general manager, resources.

यूको बैंक जीडी बिड़ला व्याख्यानमाला एवं यूको राजभाषा सम्मान समारोह संपन्न

लखनऊ। यूको बैंक, अंचल कार्यालय लखनऊ द्वारा संकल्प राजभाषा कार्ययोजना 2025-26 के अंतर्गत 'यूको बैंक जीडी बिड़ला व्याख्यानमाला' एवं 'यूको राजभाषा सम्मान' का आयोजन किया गया। व्याख्यानमाला का विषय 'हिंदी भाषा-साहित्य से व्यवसाय की यात्रा' था। मुख्य अतिथि एवं वक्ता के रूप में डॉ. अमिता दुबे, प्रधान संपादक, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान ने विस्तार से इस विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का शुभारंभ सरस्वती वंदना एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। यूको बैंक, लखनऊ अंचल के अंचल प्रमुख आशुतोष सिंह ने हिंदी भाषा के उद्भव एवं विकास का परिचय देते हुए हिंदी भाषा के रोजगारपरक स्वरूप के बारे में सभी को बताया। वैश्विक व्यापार में हिंदी भाषा की ओर बढ़ते झुकाव के बारे में भी उन्होंने जानकारी दी। उन्होंने कहा भाषा के साथ देश का विकास होता है और इससे व्यवसाय में बढ़ोतरी होती है। डॉ. अमिता दुबे ने व्याख्यानमाला में व्यावसायिक भाषा के रूप में हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वर्तमान समय में हिंदी का प्रयोग क्षेत्र बहुत व्यापक हुआ है। यह अनेक देशों में बोली एवं समझी जाती है। विश्व में अनेक देशों के विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में इसे पढ़ाया जा रहा है एवं इसमें पत्र-पत्रिकाएं भी प्रकाशित हो रही हैं। यह हिंदी भाषा की शक्ति है जो उसे निश्चित रूप से व्यवसाय की भाषा के रूप में सक्षम बनाती है। आज हिंदी व्यवसाय की प्रमुख भाषा के रूप में न केवल भारतीय बाजार में अपितु अंतर्राष्ट्रीय बाजार में बहुत तेजी से उभरी है। यूको बैंक अंचल कार्यालय द्वारा इस अवसर पर 'यूको राजभाषा सम्मान' भी दिया गया। लखनऊ विश्वविद्यालय के हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग की परास्नातक हिंदी परीक्षा 2024-25 में सर्वाधिक अंक पाने वाले दो छात्रों आराधना मिश्रा एवं शशांक पाण्डेय को 'यूको राजभाषा सम्मान' दिया गया। अनुच्छेद 351 की भावना के अंतर्गत दिए जाने वाले इस सम्मान में रु. 5000/- का ड्राफ्ट और स्मृति चिह्न प्रदान किया गया।

अख़बारों की नज़र में

यूको बैंक में जी.डी. बिड़ला व्याख्यानमाला एवं राजभाषा सम्मान का आयोजन

लखनऊ (विधान केसरी)। यूको बैंक, अंचल कार्यालय लखनऊ द्वारा संकल्प राजभाषा कार्ययोजना 2025-26 के अंतर्गत यूको बैंक जी.डी. बिड़ला व्याख्यानमाला एवं यूको राजभाषा सम्मान का भव्य आयोजन किया गया। व्याख्यानमाला का विषय हिंदी भाषा साहित्य से व्यवसाय की यात्रा था। मुख्य अतिथि एवं वक्ता डॉ. अमिता दुबे, प्रधान संपादक, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान ने विषय पर विस्तार से अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम की शुरुआत सरस्वती वंदना एवं दीप प्रज्वलन से हुई। अंचल प्रमुख श्री आशुतोष सिंह ने हिंदी भाषा के उद्भव व विकास पर प्रकाश डालते हुए इसके रोजगारपरक स्वरूप और वैश्विक व्यापार में हिंदी की बढ़ती उपयोगिता के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि भाषा के साथ देश का विकास होता है और इससे व्यवसाय में भी वृद्धि होती है। मुख्य वक्ता डॉ. अमिता दुबे ने कहा कि वर्तमान समय में हिंदी का दायरा अत्यंत व्यापक हो गया है। हिंदी अनेक देशों में बोली और समझी जाती है तथा विश्व के कई विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में पढ़ाई जा रही है। उन्होंने बताया कि पत्र-पत्रिकाओं का वैश्विक स्तर पर हिंदी में प्रकाशन, इसकी बढ़ती स्वीकार्यता और व्यावसायिक क्षमता का प्रमाण है। आज हिंदी न केवल भारतीय बाजार, बल्कि अंतरराष्ट्रीय व्यापार में भी एक प्रमुख भाषा के रूप में तेजी से उभरी है। कार्यक्रम में 'यूको राजभाषा सम्मान' भी प्रदान किया गया। लखनऊ विश्वविद्यालय के हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग की स्नातकोत्तर हिंदी परीक्षा 2024-25 में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्रों सुश्री आराधना मिश्र एवं श्री शशांक पांडेय को यह सम्मान दिया गया। अनुच्छेद 351 की भावना के अनुरूप दिए जाने वाले इस सम्मान में 5000 का ड्राफ्ट और स्मृति चिह्न प्रदान किया गया। धन्यवाद ज्ञापन श्री आलोक कुमार, सहायक महाप्रबंधक (संसाधन) ने किया। कार्यक्रम में अंचल कार्यालय द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को भी सम्मानित किया गया। संचालन डॉ. शिल्पी शुक्ला, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने किया।

दिनांक 30.03.2026 को यूको बैंक, अंचल कार्यालय लखनऊ द्वारा संकल्प राजभाषा कार्ययोजना 2025-26 के अंतर्गत 'यूको बैंक जी डी बिड़ला व्याख्यानमाला' एवं 'यूको राजभाषा सम्मान' का आयोजन किया गया। व्याख्यानमाला का विषय 'हिंदी भाषा – साहित्य से व्यवसाय की यात्रा' था। मुख्य अतिथि एवं वक्ता के रूप में डॉ०अमिता दुबे, प्रधान संपादक, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान ने विस्तार से इस विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का शुभारंभ सरस्वती वंदना एवं दीप प्रज्जवलन के साथ किया गया।

यूको बैंक, लखनऊ अंचल के अंचल प्रमुख श्री आशुतोष सिंह ने हिंदी भाषा के उद्गम एवं विकास का परिचय देते हुए हिंदी भाषा के रोजगारपरक स्वरूप के बारे में सभी को बताया। वैश्विक व्यापार में हिंदी भाषा की ओर बढ़ते झुकाव के बारे में भी उन्होंने जानकारी दी। है। उन्होंने कहा भाषा के साथ देश का विकास होता है और इससे व्ययसाय में बढ़ोत्तरी होती है। आज हिंदी भाषा को जानना व्यवसाय की दृष्टि से बहुत आवश्यक हो चुका है न केवल पूरे भारत वर्ष में अपितु वैश्विक स्तर पर भी हिंदी भाषा को जानने वालों की संख्या में प्रतिदिन वृद्धि हो रही है। इस वृद्धि का मूल कारण भारतीय बाज़ार में अपनी पैठ बनाना है।

डॉ०अमिता दुबे ने व्याख्यानमाला में व्यावसायिक भाषा के रूप में हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार पर प्रकाश डालते हुए खड़ी बोली हिंदी के उद्भव विकास और हिंदी भाषा की साहित्यिक विकास यात्रा को स्पष्ट किया। उन्होंने प्रारंभिक वस्तु विनिमय प्रणाली से आज के डिजीटल युग में व्यवसाय में भाषा की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में हिंदी का प्रयोग क्षेत्र बहुत व्यापक हुआ है। यह अनेक देशों में बोली एवं समझी जाती है। विश्व में अनेक देशों के विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में इसे पढ़ाया जा रहा है एवं इसमें पत्र-पत्रिकाएं भी प्रकाशित हो रही हैं। यह हिंदी भाषा की शक्ति है जो उसे निश्चित रूप से व्यवसाय की भाषा के रूप में भी सक्षम बनाती है। आज हिंदी व्यवसाय की प्रमुख भाषा के रूप में न केवल भारतीय बाज़ार में अपितु अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में बहुत तेज़ी से उभरी है।

यूको बैंक अंचल कार्यालय द्वारा इस अवसर पर 'यूको राजभाषा सम्मान" भी दिया गया। लखनऊ विश्वविद्यालय के हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग की परास्नातक हिंदी परीक्षा 2024-25 में सर्वाधिक अंक पाने वाली दो छात्रों सुश्री आराधना मिश्रा एवं श्री शशांक पाण्डेय को 'यूको राजभाषा सम्मान' दिया गया। अनुच्छेद 351 की भावना के अंतर्गत दिए जाने वाले इस सम्मान में रु०5000/- का ड्राफ्ट और स्मृति चिह्न प्रदान किया गया।

कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन श्री आलोक कुमार, सहायक महाप्रबंधक संसाधन ने किया। जी०डी०बिड़ला व्याख्यानमाला के अवसर पर विश्व हिंदी दिवस एवं अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर आयोजित की गई प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत भी किया गया।

अनुच्छेद 343 संघ की राजभाषा

संविधान में संघ की राजभाषा के संबंध में भाग 17 में उल्लेख किया गया है। संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी, संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा।

खंड (1) में किसी बात के होते हुए भी, इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि तक संघ के उन सभी शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा जिनके लिए उसका ऐसे प्रारंभ से ठीक पहले प्रयोग किया जा रहा था :

परन्तु राष्ट्रपति उक्त अवधि के दौरान, आदेश द्वारा, संघ के शासकीय प्रयोजनों में से किसी के लिए अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिंदी भाषा का और भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूप के अतिरिक्त देवनागरी रूप का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेंगे। इस अनुच्छेद में किसी बात के होते हुए भी, संसद उक्त पन्द्रह वर्ष की अवधि के पश्चात, विधि द्वारा अंग्रेजी भाषा का, या अंकों के देवनागरी रूप का ऐसे प्रयोजनों के लिए प्रयोग उपबंधित कर सकेगी जो ऐसी विधि में विनिर्दिष्ट किए जाएं।

बैंकिंग शब्दावली

absolute owner	एकमात्र स्वामी
accidental expenditure	प्रासंगिक व्यय
bouquet of products	उत्पाद समूह
chain marketing	श्रृंखलाबद्ध विपणन
Charge back	प्रभार वापसी
claimant	दावेदार
conferred power	प्रदत्त शक्ति
connectivity system	संबद्धता प्रणाली
deposit mobilization	जमा संग्रहण/ जमा राशि जुटाना

यूको राजभाषा सम्मान 2026

डॉ०अमिता दुबे एवं श्री आशुतोष सिंह सुश्री आराधना मिश्रा को यूको राजभाषा सम्मान प्रदान करते हुए

डॉ०अमिता दुबे एवं श्री आशुतोष सिंह श्री शशांक पाण्डेय को यूको राजभाषा सम्मान प्रदान करते हुए

यूको राजभाषा सम्मान 2025-26 के साथ सुश्री आराधना मिश्रा एवं श्री शशांक पाण्डेय

श्रीमती निकीता पाण्डेय, उप अंचल प्रमुख, डॉ०अमिता दुबे प्रधान संपादक, उ०प्र०हिंदी संस्थान, श्री आशुतोष

हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा 2024 में आयोजित की गई हिंदी परास्नातक परीक्षा में शीर्ष स्थान प्राप्त दो विद्यार्थियों को एक-एक स्मृति चिह्न एवं रू०5000/- (रुपए पांच हज़ार मात्र) का डिमांड ड्राफ्ट दिया गया।

हिंदी भाषा नहीं संस्कृति है

सुश्री छवि सक्सेना
वरिष्ठ प्रबंधक
संसाधन विभाग लखनऊ

हिंदी केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि भारतीय आत्मा की अभिव्यक्ति है। यह वह धारा है जो भारत के विविध प्रदेशों, परंपराओं और भावनाओं को एक सूत्र में बाँधती है। जब हम कहते हैं कि "हिंदी भाषा नहीं, संस्कृति है", तो हम यह स्वीकार करते हैं कि हिंदी में केवल शब्द नहीं, बल्कि जीवन के मूल्य, संवेदनाएँ और सभ्यता की गहराई समाई हुई है।

हिंदी का जन्म भारतीय मिट्टी में हुआ है। इसकी जड़ें वेदों, उपनिषदों और लोकगीतों में हैं। यह भाषा समय के साथ विकसित होती रही — संस्कृत से अपभ्रंश, फिर ब्रज, अवधी, और अंततः आधुनिक हिंदी तक।

हिंदी में जो मिठास है, वह भारतीय लोकजीवन की सादगी और आत्मीयता से आती है। यह भाषा गाँवों की चौपालों से लेकर महानगरों की गलियों तक समान रूप से जीवंत है। हिंदी और भारतीयता की पहचान विविधता में है, और हिंदी उस विविधता की एकता का प्रतीक है। यह भाषा उत्तर से दक्षिण, पूरब से पश्चिम तक लोगों को जोड़ती है।

जब कोई व्यक्ति "नमस्ते" कहता है या "कैसे हो?" पूछता है, तो वह केवल शब्द नहीं बोलता — वह भारतीय संस्कृति की आत्मीयता व्यक्त करता है। हिंदी में संवाद करना, भारतीयता को जीना है।

हिंदी साहित्य ने भारतीय संस्कृति को शब्दों में पिरोया है। तुलसीदास, कबीर, प्रेमचंद, महादेवी वर्मा, और अज्ञेय जैसे साहित्यकारों ने हिंदी को केवल भाषा नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन बनाया।

कबीर की साखियाँ, तुलसी की रामायण, और प्रेमचंद की कहानियाँ ये सब भारतीय समाज की आत्मा को उजागर करती हैं। हिंदी साहित्य ने समाज को सोचने, महसूस करने और बदलने की शक्ति दी है। हिंदी और लोक संस्कृति लोकगीत, लोककथाएँ, और लोकनाट्य ये सब हिंदी संस्कृति के जीवंत रूप हैं। शादी-ब्याह के गीतों से लेकर फसल कटाई के उत्सव तक, हर अवसर पर हिंदी अपनी भावनात्मक उपस्थिति दर्ज कराती है।

भोजपुरी, राजस्थानी, अवधी, और ब्रज जैसी बोलियाँ हिंदी की शाखाएँ हैं, जो भारतीय संस्कृति के अलग-अलग रंगों को दर्शाती हैं। आधुनिक युग में हिंदी आज तकनीकी युग में भी हिंदी अपनी पहचान बनाए हुए है। सोशल मीडिया, सिनेमा, और डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हिंदी का प्रभाव बढ़ रहा है।

लोग अब "हिंग्लिश" के माध्यम से भी हिंदी को आधुनिक रूप दे रहे हैं ।यह दिखाता है कि भाषा समय के साथ बदलती है, पर उसकी आत्मा वही रहती है। हिंदी का वैश्विक विस्तार विदेशों में बसे भारतीयों के बीच हिंदी संस्कृति का सेतु बनी हुई है। अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, और खाड़ी देशों में हिंदी विद्यालय और सांस्कृतिक मंच सक्रिय हैं।

हिंदी फिल्मों, गीतों और साहित्य ने विश्व में भारतीय संस्कृति की पहचान को मजबूत किया है। हिंदी केवल बोलने या लिखने की भाषा नहीं है। यह भारतीय जीवन का दर्शन है। इसमें हमारी परंपरा, हमारी भावनाएँ, और हमारी सभ्यता का सार है।

जब हम कहते हैं "हिंदी भाषा नहीं, संस्कृति है", तो हम यह स्वीकार करते हैं कि हिंदी में भारत की आत्मा बसती है। यह भाषा हमें जोड़ती है, सिखाती है, और हमारी पहचान को जीवित रखती है।

मास्टर दक्षित , पुत्र सुश्री प्राची श्रीवास्तव

बैंक का 84 वां स्थापना दिवस

बिजनौर रोड शाखा का उद्घाटन

शहीदपथ शाखा का उद्घाटन

अंचल कार्यालय एवं शाखाओं में विविध आयोजन किए गए जिनमें रक्तदान शिविर, स्वास्थ्य परीक्षण शिविर,वृक्षारोपण , ग्राहक गोष्ठी आदि शामिल थे। पूरे उल्लास के साथ बैंक का 84 वां स्थापना दिवस मनाया गया।

बैंक-राष्ट्र की शान

श्रीमती सारिका गुप्ता
विशिष्ट ग्राहक सेवा सहयोगी
कृष्णा नगर शाखा

बैंक केवल वित्तीय संस्थान नहीं
यह विकास का सुंदर स्वर है।
जन-जन के सपनों को देता पंख,
प्रगति का यह सच्चा आधार है॥

जब कोई किसान बीज खरीदता,
खेतों में हरियाली लहराती है।
बैंक के सहयोग से उसकी मेहनत,
सोने सी फसल बनकर मुस्काती है॥

छोटे-छोटे उद्योगों को भी,
बैंक नई राह दिखाता है।
रोजगार के अवसर बढ़ाकर,
जीवन में खुशियाँ लाता है॥

गरीबों के लिए बचत का संदेश,
हर घर तक पहुँचाता है।
छोटी-सी पूँजी को संजोकर,
भविष्य सुरक्षित बनाता है॥

छात्रों के सपनों को भी,
बैंक नई उड़ान देता है।
शिक्षा ऋण के माध्यम से,
ज्ञान का उजियारा देता है॥

महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने का,
साहस और सम्मान दिलाता है।
स्वयं सहायता समूहों को जोड़कर,
स्वावलंबन का दीप जलाता है|

आपदा जब भी आती है,
जीवन में संकट छाता है।
बैंक सहायता और राहत देकर,
मानवता का धर्म निभाता है॥
डिजिटल युग की नई कहानी,
बैंक ने सबको सिखलाई है।
घर बैठे लेन-देन की सुविधा,
जन-जन तक पहुँचाई है॥

जनधन जैसी योजनाओं से,
हर परिवार को जोड़ा है।
वित्तीय समावेशन के पथ पर,
नया विश्वास संजोया है॥

बुजुर्गों की पेंशन हो या,
श्रमिक की मेहनत की कमाई।
सुरक्षित रखकर बैंक ने ही,
सबके जीवन में खुशहाली लाई॥

देश की अर्थव्यवस्था को,
मजबूत बनाने में हाथ बढ़ाता।
बचत को निवेश में बदलकर,
विकास का रथ आगे बढ़ाता॥

सचमुच बैंक समाज का साथी,
हर सुख-दुख में साथ निभाता है।
जनकल्याण और राष्ट्र निर्माण का,
पावन दायित्व निभाता है॥

आओ हम सब मिलकर इसका,
सम्मान सदा बढ़ाएँ।
बैंक और समाज के इस रिश्ते को,
और अधिक सशक्त बनाएँ॥

बैंक है प्रगति का प्रकाश,
बैंक है विश्वास की पहचान।
समाज कल्याण के पथ पर,
बैंक बना है राष्ट्र की शान॥

व्यवसाय - मार्च 2026

(धनराशि लाख रुपए में)

कुल व्यवसाय

क्रम	शाखा क्रमांक	शाखा का नाम	धनराशि
1	1654	मिड कारपोरेट गोमतीनगर	126583.65
2	0046	हज़रतगंज	112341.55
3	0752	आई.टी.कालेज	37896.77
4	1259	बक्कास	31875.43
5	0060	लखनऊ विश्वविद्यालय	28139.71

चालू जमा

क्रम	शाखा क्रमांक	शाखा का नाम	धनराशि
1	0752	आई.टी.कालेज	8606.59
2	1849	जलसंस्थान	3254.67
3	0046	हज़रतगंज	1936
4	1654	मिड कारपोरेट गोमतीनगर	1930.4
5	1420	अशोक मार्ग	1640.82

बचत जमा

क्रम	शाखा क्रमांक	शाखा का नाम	धनराशि
1	1259	बक्कास	21446.3
2	1609	सैरपुर	17880.37
3	0060	लखनऊ विश्वविद्यालय	10204.27
4	0046	हज़रतगंज	8802.42
5	0514	चिनहट	8750.17

सावधि जमा

क्रम	शाखा क्रमांक	शाखा का नाम	धनराशि
1	0046	हज़रतगंज	73161
2	1654	मिड कारपोरेट गोमतीनगर	16925.96
3	0752	आई.टी.कालेज	16072.55
4	2270	इंदिरा नगर	15715.83
5	0060	लखनऊ	13167.61

कुल जमा

क्रम	शाखा क्रमांक	शाखा का नाम	धनराशि
1	0046	हज़रतगंज	83940.63
2	0752	आई.टी.कालेज	32000.05
3	1259	बक्कास	27559.46
4	1654	मिड कारपोरेट गोमतीनगर	24763.67
5	0060	लखनऊ	24002.35

कुल अग्रिम

क्रम	शाखा क्रमांक	शाखा का नाम	धनराशि
1	1654	मिड कारपोरेट गोमतीनगर	101819.98
2	0046	हज़रतगंज	28400.93
3	2395	पत्रकारपुरम	9054.32
4	2281	रायबरेली	7403.11
5	1873	लालबाग	6288.2

समय के साथ हिंदी की कदमताल

श्री वीरेन्द्र सिहाग

मुख्य प्रबंधक सुरक्षा लखनऊ

"भारतवर्ष में हिन्दी भाषा किसी न किसी रूप में अत्यंत प्राचीन समय से प्रयुक्त की जा रही है| भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने आधुनिक काल में हिन्दी भाषा को पुन: प्रतिष्ठित किया एवं निज भाषा की उन्नति के लिए देशवासियों को जागृत किया –

"निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल, बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को शूल |"

भारतेन्दु युग के बाद द्विवेदी युग में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी भाषा को परिमार्जित करने का कार्य किया | हिन्दी भाषा का मानकीकरण किया गया | हिन्दी के कई लेखक एवं कवियों ने अपनी रचनाओं से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया | कई विद्वानों ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने पर ज़ोर दिया| भारतीय संविधान में हिन्दी को राजभाषा बनाया गया| आज हिन्दी भारत ही नहीं, समूचे विश्व में अपनी पहचान बनाए हुए है| राष्ट्रीय स्तर से आगे बढ़कर एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों के साथ विविध मामलों में संपर्क करता है| उसे सांस्कृतिक, वाणिज्यिक तथा शैक्षणिक आदान-प्रदान करना ही पड़ता है| इस प्रकार वैश्विक स्तर पर संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने की संभावना देखी जा रही है | सदियों से भारत जैसे बहुभाषी देश की सबसे बड़ी संपर्क भाषा होने के साथ-साथ, आज यह विश्व की तीन सबसे बड़ी भाषाओं में से एक है | गत पचास वर्षों में हिन्दी की शब्द सम्पदा का जितना विस्तार हुआ है, उतना शायद ही विश्व की किसी भी भाषा का हुआ हो| विदेशों में हिन्दी के पठन-पाठन और प्रचार-प्रसार का कार्य हो रहा है| वैश्विक स्तर पर उसी भाषा को प्रधानता मिलेगी, जिसका व्याकरण संगत होगा, जिसकी लिपि कम्प्यूटर की लिपि होगी|

चूंकि हिन्दी भाषा का व्याकरण वैज्ञानिक आधार पर बना है, इसलिए देवनागरी लिपि कम्प्यूटर यंत्र की प्रक्रिया के अनुकूल है | इंटरनेट सेवा के अंतर्गत ई-मेल, चैटिंग, ई-ग्रीटिंग आदि बहुपयोगी क्षेत्र में हिन्दी भाषा का विकास एवं सम्प्रेषण की संभावनाएं अधिक हैं| कम्प्यूटर पर हिन्दी भाषा ध्वनि, चित्र, एनिमेशन के सहारे विकसित की जा रही है। कई इंटरनेट साइट में प्रमुख भारतीय भाषाओं के लिए उपयुक्त संपर्क-सूत्र, ई-मेल, सॉफ्टवेयर आदि जानकारी उपलब्धहै,जैसेwww.rajbhasha.com,www.indianlanguages.com, www.hindinet.com आदि |

जहां एक ओर सूचना प्रौद्योगिकी ने हिन्दी भाषा के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, वहीं आज के दौर में हम एक नए यथार्थ से रूबरू हैं| बाजार, पूंजी, मुक्त व्यापार और उपभोक्तावाद के नित्य नए दबावों से हमें जूझना पड़ रहा है। सचमुच भूमंडलीकरण के अपने बहुतेरे संकट हैं। पूंजी, सत्ता शक्ति और मार्केटिंग के अंधेरे मकड़जाल में फंसे ज्यादातर लोगों के पास समय या स्पेस का घोर संकट हैं। उनके पास नए-नए कार मॉडल्स, फैशन शो, हवाई यात्राएं और फार्महाउस की कॉकटेल पाटियां हैं, जहां व्यावसायिक हित साधने के वास्ते नए किस्म के तात्कालिक व्यापार के जरिए कमाई के नए नए हथकंडे ईजाद किए जाते हैं, जहां हरदम माल की मार्केटिंग व पैकेजिंग की चिंता दिमाग पर सवार रहती हो, ऐसे वैश्विक संकट के दौर में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया / मल्टी मीडिया के जरिए संसार भर में सूचनाओं का विस्फोट रोज की नई घटना के रूप में दर्ज किया जाता है।

यह एक ऐतिहासिक सच्चाई है कि हम उस युग में जी रहे है जहां नई प्रौद्योगिकी तथा सूचना तकनीक ने संस्कृति के उस पॉपुलर मीडिया बाजार को जन्म दिया जिसके जरिए तमाम टीवी चैनल्स, ई मेल, सोशल नेटवर्किंग साइट्स, ई बुक्स, आई पैड,टेबलेट पीसी जैसे संचार के नए-नए संसाधनों के जरिए अभिव्यक्ति के एक साथ अनेकों माध्यम सरल सुलभ हो गए हैं।

छोटे बच्चे से लेकर किशोर, युवा, वृद्ध तक सुदूर देहात, गांव, कस्बों से लेकर छोटे मंझोले शहरों या महानगरों तक इंटरनेट के विशालकाय राक्षस ने सबको अपनी जद में जकड़ लिया है। दिनोंदिन सूचनाओं के प्रवाह की गति बढ़ती ही जा रही है। जितनी देर में हम एक छोटा सा वाक्य पढ़ते है, उतनी देर में करोड़ों ईमेल संदेश एक जगह से विश्व के दूसरे किसी भी कोने तक पहुंच चुके होते हैं। हकीकत से मुठभेड़ करें तो पता चलता है कि आज के इस डिजिटल युग में जहां कहीं भी भूतल पर उंगली की एक क्लिक मात्र करते ही तमाम किताबों को छापा, पढ़ा या बांटा जा सकता है। यह ऐसी भयावह सचाई है जिसे दरकिनार कर हम हिंदी भाषा एवं साहित्य की चर्चा कर ही नही सकते। सालों बाद बदलाव की ऐसी जबरदस्त आंधी आई है जिसने हमारी प्राचीन परंपरा, संस्कृति, साहित्य, कला और जीवनशैली को आमूलचूल तरीके से बदलकर रख दिया।

आज की यह आभासी दुनियां आज के अधैर्य मानसिक संरचना को बढ़ावा देती नजर आती है। हड़बड़ी के इस दौर में जो जैसा लिख देता है, वही पलक झपकते झटपट छप भी जाता है। लेखकों को फटाफट प्रसिद्धि भी तुरत-फुरत हासिल हो जाती है। आज के हिंदी साहित्य के गिरते स्तर से क्षुब्ध होकर राष्ट्रकवि दिनकर जी ने कभी कितनी सटीक टिप्पणी की थी- ''संकलनों में कविता से पहले कवि का वक्तव्य छापा जाता है। पाठकों का अंतर्मन कहता है , कविता की खोज में अब क्या धरा है , कवि की खोज करो।''

इसी झटपट कल्चर के चलते हिंदी भाषा एवं हिंदी साहित्य के प्रति वैसी अटूट प्रतिबद्धता या गंभीर संस्कार धीरे-धीरे अप्रासंगिक या कमतर होते नजर आ रहे हैं। प्रतिष्ठित पत्रिकाओं के संपादकों के अपने तर्क है।

रचना प्रक्रिया से जुड़े सच का एक पहलू तो ये भी है कि भूमंडलीकरण के इस तेज रफ्तार समय में हिंदी के अजीबोगरीब शब्दजाल रचे जाने लगे। आज हिंदी साहित्य की मूल भाषा बदली है, संदर्भ भी नए-नए हैं, प्रासंगिकता को बनाए रखने के लिए इन बदलावों को जरूरी बताया जा रहा है मगर या तो उनके संज्ञान में बाजार की अपेक्षा के मुताबिक जो कुछ भी, चाहे जैसे भी टूटी-फूटी हिंदी में रच देने की आकुलता है जिससे हिंदी की साहित्यिक यात्रा बाधित होती है। यह चिंताजनक है कि जैसे-जैसे हिंदी भाषा एवं साहित्य की दोस्ती बाजारवादी मूल्यों मानदंडों से होती गई, वैसे-वैसे विकास के बाजारवादी मॉडलों के मुताबिक भाषा के जाने पहचाने तेवर, शब्द, मुहावरे, प्रतिमान वगैरह जरूर बदलते गए मगर रस, रूप व गंध से सना गंभीर हिंदी साहित्य हमसे पीछे छूटता गया।

जब हमारी असंख्य जनसमुदाय की भाषा हिंदी में रचा बुना साहित्य आम जन के बीच उनकी भाषा एवं संवेदना संसार के ठेठ मिजाज को उनकी जिंदादिली के साथ धीमी आंच में पकाकर उकेरेगा, वही हिंदी भाषा का लेखन करोड़ों देशवासियों की सार्वदेशिक लोकप्रियता हासिल करेगा।

बेशक मौजूदा दौर में हिंदी की साहित्यनुमा पत्रकारिता सत्ता, पूंजी व बाजार के दुष्चक्र में फंसी फड़फड़ाते रहने को अभिशप्त है, ऐसे माहौल में परंपरागत मूल्यों एवं सामाजिक सरोकारों के लिए जीने मरने वाले हिंदी के प्रतिबद्ध साहित्यकार नही रहे तो वैसा गंभीर साहित्य भी नदारद है, यह गंभीर चिंता का विषय है। हिंदी भाषा की सहज गति व सरलता से रचा गया साहित्य असंख्य आमजनों की रूह तक जाएगा तभी उसका दीर्घजीवी प्रभाव रहेगा।

अपने अर्जित ज्ञान, दीर्घ अनुभव व कल्पनाशीलता से पाठकों की प्रश्नाकुलता को शांत करती हिंदी साहित्य की रचनाएं पढ़कर हमारी अंर्तदृष्टि बदल जाती हैं, हमारे हिंदुस्तानियों के सोए सपनों में नए-नए पंख लग जाते और इन्ही शब्द चित्रों के जरिए हमारे पाठक हिंदी की रचना से संलग्नता महसूस करते हुए मंत्रमुग्ध हो स्वयं को भूलकर किन्ही अबूझ जादुई रहस्य लोक की सैर पर निकल जाते। हिंदी भाषा में रचा ऐसा साहित्य पढ़कर हम वैसे नही रह जाते, बल्कि कुछ और हो जाते। हमारे व्यक्तित्व में दृष्टिसम्पन्नता या परिपूर्णता का बोध कराता है हमारी भाषा में रचा साहित्य हमारे भीतर आत्मसंघर्षी चेतना जगाता है हिंदी साहित्य। सालों बाद आज भी कथा सम्राट प्रेमचंद के गोदान उपन्यास की स्त्री किरदार धनिया की जीवटता से पाठक प्रेरित होते हैं तो मुक्तिबोध जैसे कालजयी कवि का अंतःसंघर्ष पाठक की सुप्तावस्था को तोड़ता है।

इसी तरह दशकों पहले कबीर, सूरदास एवं तुलसी की रचनाएं करोड़ों देशवासियों की रोजमर्रा की बोली वानी में शामिल हैं। महाकवि निराला की कंठस्थ कविताएं – बीती विभावरी जाग री, जयशंकर प्रसाद की देशभक्ति में रची बुनी कविताएं- अरूण, यह मधुमय, देश हमारा, जहां पहुंच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा, पढ़कर लाखों भारतीयों की सोई संवेदना के तार जग जाते और कविताएं हमारे अंतस को छूकर झकझोरने लगतीं। हिंदी भाषा में रची ऐसी असंख्य आत्मीय कृतियां हैं जो समय की सुदीर्घ पगडंडी पर चलते हुए इंसानियत का जीता जागता दस्तावेज बनती जाती हैं। हिंदी साहित्य की ऐसी रचनाएं अपनी आत्मशक्ति के सहारे देशकाल की सीमाएं लांघकर व्यापकता, विविधता व गहराई के बलबूते हमारी चेतना को समुन्नत करती हैं।

आज इस दौर में साहित्य को इंटरनेट व डिजिटल माध्यमों से लगातार चुनौती मिल रही है, ऐसे में सचमुच हमें सरोकारों में गहरे धंसकर जीवन को मूल्यवान व सार्थक दिशा देने वाले हिंदी साहित्य की तरफ लौटना ही होगा। बहुसांस्कृतिकता से रचे बसे हमारे देश की जीवन शैली में यह और ज्यादा जरूरी हो गया है कि हाशिए पर खिसकते जा रहे हिंदी में रचे साहित्य को केंद्र तक खींचकर लाया जाए। हिंदी पट्टी में रहते असंख्य आदिवासियों, करोड़ों दलितवर्ग व अनगिनत स्त्रियों के आत्मसंघर्ष की दिल दहला देने वाली सच्ची कहानियां, कविताएं व आत्मकथाएं हिंदी भाषा में ही अभिव्यक्त पा सकीं हैं जिनमें करोड़ों देशवासियों के अदम्य साहस, जिंदादिली और आत्मबल के जीते जागते ऐसे अमिट दस्तावेज हैं जिन्हें पढ़ते हुए आगामी पीढ़ियां निश्चित ही अपने खोए आत्मबल व आत्मविश्वास को दुबारा हासिल करने की प्रेरणा व शक्ति ग्रहण करती रहेंगी, इसमें संदेह नही। आइए, हम सब मिलकर अपनी देश की पहचान भाषा हिंदी में ही सतत साहित्य को रचें, करोड़ों देशवासियों की आवाज को अभिव्यक्ति दें। सूचना प्रौद्योगिकी एक सरल तंत्र है, जो तकनीकी उपकरणों के सहारे सूचनाओं का संकलन, प्रक्रिया एवं सम्प्रेषण करता है| सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कम्प्यूटर का अत्यंत महत्व है, जिससे व्यावसायिक, वाणिज्यिक, जनसंचार, शिक्षा, चिकित्सा आदि कई क्षेत्र लाभान्वित हुए हैं |

आज का युग वैज्ञानिक व तकनीकी क्रान्ति का युग है| सूचना क्रान्ति ने पूरे भूमंडल को समेट कर छोटा कर दिया है| वर्तमान समय में कोई भी भाषा सूचना प्रौद्योगिकी के बिना पल्लवित और पोषित नहीं हो सकती| राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार भी सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से हिन्दी का और अधिक प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध है | हिन्दी के लिए ई-टूल्स सुदृढ करने का कार्य किया जा रहा है| 'वोकल फॉर लोकल' के अंतर्गत किए जा रहे कार्यों में राजभाषा विभाग द्वारा निर्मित स्मृति आधारित अनुवाद टूल 'कंठस्थ' का विस्तार किया गया है, जिससे अनुवाद के क्षेत्र में समय की बचत करने के साथ-साथ एकरूपता और उत्कृष्टता भी सुनिश्चित की जा सके| इसके अतिरिक्त लीला हिन्दी प्रवाह, ई-महाशब्दकोश मोबाइल एप्लीकेशन भी हिन्दी प्रेमियों के लिए अत्यंत उपयोगी हैं | राजभाषा विभाग द्वारा ई–सरल हिंदी वाक्यकोश का विकास किया जा रहा है, इनसे केंद्र सरकार एवं इससे संबन्धित अन्य कार्यालयों में हिन्दी का प्रयोग करने में सुविधा होगी |

कार्यालयों में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के साथ ही आवश्यकता इस बात की है कि सूचना क्रान्ति के इस विस्फोट से हमारी हिंदी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति को हानि न पहुंचे। इंटरनेट पर भाषा, साहित्य, संस्कृति और कला के बाजार ने अपनी-अपनी दुकानें सजा ली हैं। लोग बड़ी उम्मीद से इस तरफ ताक रहे हैं। इस सच्चाई से मुंह नही मोड़ा जा सकता कि हमारे देश के सुदूर देहातों, गांवों या कस्बों तक इस नई तकनीक के सहारे वहां भी एक नई सुबह का नजारा देखा जा सकता है। विज्ञान व तकनीकी क्षेत्रों में राजभाषा हिन्दी की संभावनाएं अच्छी हैं| हालांकि हिन्दी में कम्प्यूटर शब्दावली निर्माण में प्रयास किए जा रहे हैं, तथापि अभी भी हिन्दी तकनीकी दृष्टि से पूरी तरह विकसित नहीं है| विश्व स्तर के कई सॉफ्टवेयर में अभी तक हिन्दी का समावेश नहीं किया गया है | भारत के लिए आवश्यक है कि वह सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग कर वैश्विक स्तर पर हिन्दी भाषा, हिन्दी साहित्य को प्रतिष्ठित करे सूचना प्रौद्योगिकी को अपने से जोड़े रखे एवं हिन्दी सहित भारतीय भाषाओं में विकसित करे |

पुस्तक समीक्षा- मिलजुल मन (उपन्यास)

उपन्यासकार – मृदुला गर्ग

डॉ.शिल्पी शुक्ला

मुख्य प्रबंधक राजभाषा लखनऊ

'मिलजुल मन' हिंदी साहित्य की वरिष्ठ साहित्यकार मृदुला गर्ग का उपन्यास है जिसे साहित्य अकादमी भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत किया गया है। उपन्यास की कहानी दो बहनों गुलमोहर और मोगरा के इर्द-मिर्द घूमती है। इस उपन्यास को आत्मपरक संस्मरण एवं कल्पना का बेजोड़ मिश्रण कहा जा सकता है।

उपन्यास का कालखंड आज़ादी के बाद का है। उपन्यास में लोगों के जीवन में आए बदलावों को बड़ी ही रोचकता के साथ चित्रित किया गया है। यह उपन्यास 2013 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित हुआ और इसे उपन्यासकार की विशिष्ट शैली और संवेदनशील दृष्टि के लिए सराहा गया। 'मृदुला जी ने एक बेहद नाज़ुक और नज़दीकी रिश्ते और एक सशक्त कहानीकार के बीच जिस साफ़गोई और संवेदनशीलता से इस उपन्यास का ताना-बाना बुना है वह न केवल बेहद दिलचस्प है बल्कि एक मेयारी अदबी हासिल भी है। यह वर्तमान दौर के हिंदी साहित्य में बहुत कुछ नया जोड़ता है'।

यह उपन्यास समग्रता से एक परिवार के सदस्यों के आपसी रिश्तों, उनके संघर्षों, अपेक्षाओं और आंकांक्षाओं को सूक्ष्मता से चित्रित करता है। यह उपन्यास अपने नारी पात्रों के माध्यम से नारी स्वतंत्रता की बात भी सामने रखता है। गुलमोहर अपने पति के साथ जाने पर स्वयं निर्णय लेती हुई कहती है-"मेरा पति है, मुझे उसके साथ जाना है | उसमें किसी और का दखल क्यों जरूरी है?" स्त्री की स्वतंत्रता, जिम्मेदारियाँ और सामाजिक अपेक्षाएँ उजागर होती हैं। उपन्यास में गुलमोहर और मोगरा की बातों में लेखिका की टिप्पणी या कहें नरेशन घुल मिल जाता है जो इसे विशिष्टता

प्रदान करता है। 'मिलजुल मन' उपन्यास जिंदगी का बयान होते हुए भी स्त्री का मन, स्त्री की सोच, दृष्टि एवं समस्याओं से संबंधित स्थितियों का जायजा लेते हुए दृष्टिगोचर होता है।' -डॉ वृषाली मांद्रेकर

इसमें 1950 के दशक के मध्यमवर्गीय जीवन, पंचवर्षीय योजनाओं और स्वतंत्र भारत के मूल्य उजागर हुए हैं। मृदुला गर्ग विसंगति और संगति को एक साथ पिरोने में माहिर हैं। वे पाठक को स्वयं सोचने पर मजबूर करती हैं। गीतांजलि श्री के अनुसार यह उपन्यास स्त्री के सुख और उसके भ्रम की गहरी पड़ताल करता है। प्रमुख पात्र गुलमोहर जिम्मेदार, गृहस्थी संभालने वाली, बाद में लेखन की ओर अग्रसर, मोगरा स्वतंत्र विचारों वाली, डॉक्टर बनने की आकांक्षा, बाद में अर्थशास्त्र पढ़ती है बैजनाथ जैन पिता, स्वतंत्रता सेनानी, बच्चों की शिक्षा पर विशेष ध्यान रखते हैं, कनकलता साहित्य प्रेमी, दुनियादारी से अनजान है। सभी पात्र बेहद सहजता से अपने किरदार निभाते हैं और उपन्यास की कहानी पूर्णता प्राप्त करती है। उपन्यास स्वतंत्र भारत के सामाजिक और पारिवारिक बदलावों को गहराई से दिखाता है। यह उपन्साय स्त्री की स्वतंत्रता और सामाजिक बंधनों के बीच संघर्ष को भी उजागर करता है। मिलजुल मन नारी जीवन, परिवार और स्वतंत्र भारत की सामाजिक-राजनीतिक यात्रा को अंकित करता है। यह उपन्यास पाठक को सोचने पर मजबूर करता है। निश्चितरूप से यह उपन्यास हिंदी साहित्य की एक धरोहर है।

एनपीएस वात्सल्य

योजना	पीएफआरडीए द्वारा विनियमित और प्रशासित एक बचत-सह-पेंशन योजना।
पात्रता	सभी नाबालिग नागरिक (18 वर्ष तक की आयु)
संचालन	• नाबालिग के नाम पर खाता खोला जाएगा और अभिभावक द्वारा संचालित किया जाएगा • नाबालिग एकमात्र लाभार्थी होगा
खाता कहाँ खोलें	• एनपीएस वात्सल्य खाता पॉइंट्स ऑफ प्रेजेंस (पीओपी) के माध्यम से खोला जा सकता है, जिसमें प्रमुख बैंक, इंडिया पोस्ट, पेंशन फंड आदि शामिल हैं। • ऑनलाइन प्लेटफॉर्म (ई-एनपीएस)
अपेक्षित प्रलेख	• अभिभावक का केवाईसी पहचान और पते के प्रमाण प्रस्तुत करके किया जाएगा (आधार, ड्राइविंग लाइसेंस, पासपोर्ट, वोटर आईडी कार्ड, नरेगा जॉब कार्ड, राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर) • नाबालिग की जन्मतिथि का प्रमाण (जन्म प्रमाण पत्र, स्कूल छोड़ने का प्रमाण पत्र, मैट्रिकुलेशन प्रमाण पत्र, पैन, पासपोर्ट) • यदि अभिभावक एनआरआई है तो नाबालिग का एनआरई/एनआरओ बैंक खाता (एकल या संयुक्त)
अंशदान	न्यूनतम 250 रुपये प्रति वर्ष और अधिकतम कोई सीमा नहीं।
पेंशन निधि चयन	अभिभावक पीएफआरडीए के साथ पंजीकृत किसी भी पेंशन फंड का चयन कर सकते हैं।
निवेश विकल्प	(1) डिफ़ॉल्ट विकल्प: मॉडरेट लाइफ साइकिल फंड-एलसी-50 (50% इक्विटी) (2) स्वतः विकल्प: अभिभावक लाइफसाइकिल फंड-एग्रेसिव-एलसी-75 (75% इक्विटी), मॉडरेट एलसी-50 (50% इक्विटी) या कंज़र्वेटिव-एलसी-25 (25% इक्विटी) का चयन कर सकते हैं। (3) सक्रिय विकल्प: अभिभावक इक्विटी (75% तक), कॉर्पोरेट ऋण (100% तक), सरकारी प्रतिभूतियों (100% तक) और वैकल्पिक परिसंपत्ति (5% तक) में निधियों के आवंटन का सक्रिय रूप से निर्णय लेते हैं।
निकासी, निकास और मृत्यु	• 3 साल की लॉक-इन अवधि के बाद शिक्षा, निर्दिष्ट बीमारी और विकलांगता के लिए अंशदान के 25% तक की निकासी की अनुमति है। अधिकतम तीन बार। • 18 वर्ष की आयु प्राप्त करने पर, एनपीएस टियर-1 (सभी नागरिक) में निर्बाध स्थानांतरण • 18 वर्ष की आयु प्राप्त करने पर निकास की अनुमति है ⇒ 2.5 लाख रुपये से अधिक का कोष: 80% कोष वार्षिकी की खरीद के लिए उपयोग किया जाता है और 20% एकमुश्त निकाला जा सकता है ⇒ 2.5 लाख रुपये से कम या बराबर का कोष: पूरा कोष एकमुश्त निकाला जा सकता है। मृत्यु पर, पूरा कोष अभिभावक को लौटा दिया जाएगा

ग्राहक सेवा में आर्टीफीशियल इंटेलिजेंस और चैटबोट्स की उपयोगिता

श्री मनोज कुमार

विशेष ग्राहक सेवा सहयोगी

संडीला शाखा

आर्टीफीशियल इंटेलिजेंस (एआई) एक परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में उभरा है, जिसने विभिन्न उद्योगों में क्रांति ला दी है और हमारे रहने और काम करने के तरीके को नवीन आकार दिया है। इसके उपयोगों मे दक्षता और उत्पादकता बढ़ाना, स्वास्थ्य देखभाल और चिकित्सा में परिवर्तन, प्रगतिशील शिक्षा और व्यक्तिगत ज्ञानार्जन को आगे बढ़ाना तथा स्मार्ट शहरों और बुनियादी ढांचे को सशक्त बनाना महत्वपूर्ण हैं। वैश्विक स्तर पर देखा जाए तो उन देशों में निवेश की संभावनाएँ ज़्यादा हैं, जहाँ एआई संबंधित कार्य पहले से ही सकुशल चल रहे हों ! इस क्षेत्र से जुड़ी यदि चार सबसे बड़ी कंपनियों गूगल (अल्फाबेट), अमेज़न, एप्पल तथा फेसबुक की बात की जाए तो इनकी कुल निवल संपत्ति 5 ट्रिलियन डॉलर के बराबर है, जो कि विश्व के लगभग 99% देशों की जी.डी.पी. से ज़्यादा है। मशीन लर्निंग, डीप लर्निंग और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण में प्रगति के साथ, एआई अधिक बुद्धिमान और सक्षम होता जा रहा है, जिससे इसके निहितार्थ और अनुप्रयोगों के बारे में उत्साह और चिंताएं दोनों बढ़ती जा रही हैं। अभी भी ऐसे कई क्षेत्र हैं, जिनमें भारत को यह तकनीक अपनाने के लिये और अधिक मेहनत करने की आवश्यकता है।

आर्टीफीसियल इंटेलिजेंस (एआई) क्या है?

आर्टीफीसियल इंटेलिजेंस जिसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता के रूप में भी जाना जाता है, एक ऐसी तकनीक है जिसमें मानव जैसी, समस्या-समाधान करने की क्षमता होती हैं। एआई, मानव बुद्धिमत्ता का अनुकरण करता हुआ प्रतीत होता है - यह छवियों को पहचान सकता है, कविताएँ लिख सकता है और डाटा आधारित भविष्यवाणियाँ कर सकता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तकनीकी डाटा का विश्लेषण करती है और इसका उपयोग व्यावसायिक संचालन में प्रभावी रूप से सहायता करने के लिए करती है। उदाहरण के लिए एआई तकनीक ग्राहक सहायता में मानवीय बातचीत का जवाब दे सकती है, मार्केटिंग के लिए मूल चित्र और पाठ बना सकती है और एनालिटिक्स के लिए स्मार्ट सुझाव दे सकती है।

बैंकिंग क्षेत्र में चैटबॉट

चैटबॉट, एआई का ही एक प्रकार है जिसे कई वित्तीय संस्थानों ने अपने ग्राहकों को 24/7 सेवा प्रदान करने के लिए लागू किया है। चैटबोट्स लेन-देन, खाता विवरण और कई अन्य अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्नों के उत्तर बिना किसी व्यक्ति को शामिल किए दे सकते हैं !

चैटबॉट को उपयोगकर्ता के प्रश्नों का उत्तर देने के लिए मार्गदर्शक और सहायक के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। हालाँकि, इसका दायरा विशिष्ट एल्गोरिदम द्वारा सीमित है। बैंकिंग चैटबॉट सिर्फ़ ग्राहकों के सवालों को ही नहीं समझते बल्कि नेचुरल लेंग्वेज प्रोसेसिंग के जरिए मानवीय भाषा की बारीकियों को भी समझते हैं। ये चैटबोट्स अपने खाते की शेष राशि, ब्याज दर या लेन-देन का इतिहास जानने, फंड ट्रांसफर करने, अपॉइंटमेंट सेट करने और डेटा-संचालित एल्गोरिदम के आधार पर वित्तीय सलाह भी देते हैं।

एआई क्यों ?

एआई के पीछे के 'क्यों' को समझने के लिए, पीछे की ओर जाना चाहिए और उद्योग में बैंकिंग सहायकों की प्रमुख बाधाओं की जांच करनी चाहिए जिन्हें दूर करने में वे मदद करते हैं। ये बाधाएँ हैं :-

उच्च परित्याग दरों से निपटना :- कॉर्नरस्टोन एडवाइजर्स के एक अध्ययन के अनुसार, डिजिटल अकाउंट चेकिंग के लिए आवेदन करने वाले लगभग आधे आवेदनों को पूरा होने से पहले ही छोड़ दिया जाता है। जब लोन की बात आती है, तो यह संख्या बहुत बढ़ जाती है। चैटबॉट द्वारा प्रदान किया जाने वाला त्वरित और सटीक संघर्ष समाधान इन परित्याग दरों को कम कर सकता है और ग्राहक अनुभव को बेहतर बना सकता है।

डेटा प्रबंधन को सुव्यवस्थित करना :- बैंकों द्वारा संभाले जाने वाले ग्राहकों का डेटा बहुत बड़ा है, लेकिन अक्सर यह इतना बिखरा होता है कि ग्राहक सेवा एजेंट सिर्फ़ एक क्वेरी को एक साथ जोड़ने में ही अपना कीमती समय बरबाद कर देते हैं। चैटबॉट इस डेटा को केंद्रीकृत कर सकते हैं, जिससे क्वेरी का समाधान आसान हो जाता है।

'प्रथम नाम' के आधार से हट कर वैयक्तिकरण :- किसी ग्राहक का नाम ईमेल में डालना छद्म-वैयक्तिकरण है। चैटबॉट व्यक्तिगत प्राथमिकताओं और व्यवहारों के आधार पर मार्केटिंग रणनीतियों को तैयार करने के लिए मजबूत ग्राहक डेटा का उपयोग कर सकते हैं। बिजनेस इनसाइडर के अनुसार, 80% वित्तीय संस्थान चैटबॉट को ग्राहक सेवा में सुधार के अवसर के रूप में देखते हैं। इसके अलावा, जुनिपर रिसर्च का अनुमान है कि चैटबॉट 2023 तक वैश्विक स्तर पर व्यवसायों के लिए परिचालन लागत में $7 बिलियन तक की कटौती कर सकते हैं। इसे एक्सेंचर की रिपोर्ट के साथ जोड़ें जो इंगित करती है कि एआई 2035 तक वित्तीय क्षेत्र में $1.2ट्रिलियन मूल्य जोड़ सकता है!

चैटबॉट के लाभ

एआई संचालित ऑटोमेशन ने उद्योगों में ग्राहक सहायता कार्य को पूरी तरह से बदल दिया है । ग्राहक अब बैंकिंग और वित्तीय सेवाओं से तत्काल और सुविधाजनक सहायता की अपेक्षा करते हैं। संवादात्मक बैंकिंग चैटबॉट ग्राहकों के साथ-साथ बैंकों के लिए भी फायदेमंद हैं। बुद्धिमान चैटबॉट और वॉयस बॉट की उपयोगिता और लाभों की एक लंबी सूची है, लेकिन बैंकिंग के लिए कुछ विशिष्ट निम्नलिखित हैं : -

24/7 उपलब्धता - एआई चैटबॉट शाम 5 बजे बंद नहीं होते, वे आवश्यक जानकारी और सहायता प्रदान करने के लिए 24/7 उपलब्ध रहते हैं। यह वैश्विक बैंकों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जो किसी भी समय सीमा में ग्राहकों को सेवा प्रदान करते हैं । निरंतर उपलब्धता से न केवल ग्राहक संतुष्टि बढ़ती है, बल्कि विश्वसनीयता और पहुंच के मामले में बैंक की प्रतिष्ठा भी बढ़ती है।

लागत बचत - एआई चैटबॉट सवालों के जवाब देने से कहीं ज़्यादा काम करते हैं ! वे परिचालन लागत को काफ़ी हद तक कम कर देते हैं। बड़ी संख्या में ग्राहकों के सवालों को कुशलतापूर्वक संभालकर, चैटबॉट बड़ी ग्राहक सेवा टीम की ज़रूरत को खत्म कर देते हैं। इन बचाए गए संसाधनों को अधिक महत्वपूर्ण, जटिल कार्यों के लिए आवंटित किया जा सकता है, जिससे समग्र उत्पादकता और लागत-दक्षता में वृद्धि होगी।

त्वरित प्रतिक्रिया - जहाँ हर सेकंड मायने रखता है, होल्ड पर इंतज़ार करना बेहद निराशाजनक हो सकता है। एआई चैटबॉट आम ग्राहक प्रश्नों का तुरंत जवाब देते हैं, जिससे प्रतीक्षा समय में कमी आती है। यह तत्काल संपर्क ग्राहकों की संतुष्टि बढ़ाता है।

उच्च मात्रा के अनुरोध संभालना - व्यवसाय के व्यस्ततम घंटों या प्रचार कार्यक्रमों के दौरान ग्राहक सेवा लाइनों पर पूछताछ की बाढ़ आ सकती है। एआई चैटबॉट इन उच्च मात्राओं का प्रबंधन करने में उत्कृष्ट हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि प्रत्येक ग्राहक प्रश्न का तुरंत समाधान किया जाए, जिससे ग्राहक अनुभव की एक समान गुणवत्ता बनी रहे।

भाषाई लचीलापन - आज की वैश्वीकृत दुनिया में, बहुभाषी दृष्टिकोण अक्सर आवश्यक होता है। एआई चैटबॉट कई भाषाओं में संवाद कर सकते हैं, भाषा संबंधी बाधाओं को तोड़ सकते हैं और अधिक समावेशी ग्राहक अनुभव प्रदान कर सकते हैं।

बेहतर ग्राहक अनुभव - चैटबॉट त्वरित समाधान से कहीं ज़्यादा प्रदान करते हैं ! ग्राहक की पिछली बातचीत और प्राथमिकताओं का विश्लेषण करके, चैटबॉट कस्टम समाधान और सुझाव प्रदान कर सकते हैं,जिससे समग्र ग्राहक अनुभव में वृद्धि होती है।

क्रेडिट स्कोर का मूल्याँकन आमतौर पर ग्राहक के लिए बहुत जटिल होता है और इसमें बहुत समय लगता है। एआई की बदौलत, जिसके पास खाते के भीतर सभी वित्तीय जानकारी तक पहुंच है, किसी की क्रेडिट सीमा या उन्हें कैसे सुधारा जाए, इस बारे में कुछ जानकारी प्राप्त करना तेज़ हो सकता है। इस तरह, ग्राहकों को अपनी वित्तीय क्षमताओं और वे किस राशि के लिए आवेदन कर सकते हैं, यह पता चल जाएगा। साथ ही एआई किसी की वित्तीय ज़रूरतों और स्थिति के लिए सही निवेश समाधान खोजने में मदद कर सकता है और फंड के साथ आगे बढ़ने के बारे में सलाह दे सकता है।

डिजिटल प्लेटफॉर्म के साथ आसान एकीकरण - चैटबॉट अत्यधिक अनुकूलनीय हैं, तथा मोबाइल ऐप से लेकर ऑनलाइन बैंकिंग वेबसाइट तक, विभिन्न डिजिटल प्लेटफार्मों के साथ एकीकृत करने में सक्षम हैं। यह निर्बाध एकीकरण ग्राहकों के लिए सहायता प्राप्त करना आसान बनाता है, जहां उन्हें इसकी आवश्यकता होती है, जिससे उपयोगकर्ता अनुभव में सुधार होता है। **अप-सेलिंग और क्रॉस-सेलिंग** - चैटबॉट उपलब्ध डेटा और जुड़ाव पैटर्न का विश्लेषण करके वित्तीय उत्पाद या सेवाएँ प्रदान कर सकते हैं जो वास्तव में आपके लक्ष्यों के साथ संरेखित हैं। इस तरह की लक्षित अप-सेलिंग और क्रॉस-सेलिंग न केवल बैंक के राजस्व को बढ़ाती है बल्कि प्रासंगिक ऑफ़र प्रदान करके ग्राहक संतुष्टि को भी बढ़ाती है। **डाटा सुरक्षा** - बैंकिंग क्षेत्र में चैटबॉट्स को मजबूत सुरक्षा उपायों के साथ डिज़ाइन किया गया है जो सुरक्षा को प्राथमिकता देते हैं। वे संवेदनशील जानकारी की सुरक्षा के लिए एन्क्रिप्शन का उपयोग करते हैं जिससे यह सुनिश्चित होता है कि ग्राहक का वित्तीय विवरण और व्यक्तिगत जानकारी सुरक्षित हैं। अक्सर लेनदेन के लिए प्रमाणीकरण की आवश्यकता होती है और डेटा की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता होती है। बैंकिंग में धोखाधड़ी का पता लगाने के लिए एआई-संचालित एल्गोरिदम लेन-देन, खातों और उपयोगकर्ता व्यवहार में पैटर्न और विसंगतियों का विश्लेषण करते हैं। इससे बैंकिंग चैटबॉट असामान्य गतिविधियों और संभावित धोखाधड़ी वाले लेन-देन का पता लगा सकते हैं, जिससे ग्राहकों के लिए सुरक्षा बढ़ती है !

चैटबॉट का भविष्य और ग्राहक सेवा मे नवपरिवर्तन

एआई चैटबॉट्स का भविष्य बढ़ी हुई दक्षता, व्यक्तिगत अनुभव और बेहतर ग्राहक सेवा से जुड़ा है। जैसे-जैसे एआई तकनीक आगे बढ़ेगी, चैटबॉट और भी ज़्यादा स्मार्ट और सक्षम होते जाएंगे, जिससे ग्राहकों और बैंकों के बीच बातचीत बढ़ेगी।

चैट बाट्स के ग्राहक सेवा मे नवीनीकरण के लिए निम्नलिखित उपयोग संभावित हैं :-

(I) लीड जनरेशन और ग्राहक अधिग्रहण

(ii) स्वचालित ग्राहक सहायता

(iii) वित्तीय सलाह

(iv) स्मार्ट भुगतान प्रसंस्करण

चैट बाट्स का उपयोग का ग्राहक सेवा को प्रभावी बनाता है और ग्राहकों को अल्प समय में जानकारी उपलब्ध करवाता है।

एआई ने बैंकिंग उद्योग को कई स्तरों पर बहुत प्रभावित किया है। इसमें क्लाउड पर जाकर डेटा प्रथाओं का आधुनिकीकरण और बैंकिंग सेवाओं की नींव में एआई को एकीकृत करना शामिल है। एआई को पहली बार बैंकिंग में 1980 में विशेषज्ञ प्रणालियों के साथ पेश किया गया था। उन्होंने बाजार की भविष्यवाणियों और अनुकूलित सलाह पर ध्यान केंद्रित किया। सिस्टम ने विशेषज्ञों के रूप में कार्य करके निर्णय लेने में मानवीय त्रुटियों को कम किया। सतत् विकास लक्ष्यों पर ए.आई. के प्रभावों की समीक्षा करते हुए मशहूर पत्रिका 'नेचर' ने अपने एक अध्ययन में पाया कि तकनीक 79% सतत् विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक हो सकती है परंतु साथ ही यदि इस तकनीक के विनियमन पर ध्यान नहीं दिया गया तो यह लगभग 35% सतत् विकास लक्ष्यों को बाधित भी कर सकती है।

सुश्री प्राची श्रीवास्तव द्वारा बनाई गई लिप्पन कलाकृति

यूको अवध संदेश का विमोचन

13 वें अखिल भारतीय राजभाषा अधिकारी सम्मेलन में अंचल की छमाही पत्रिका यूको अवध संदेश के 36 वें अंक का विमोचन किया गया। श्री नरेन्द्र सिंह मेहरा, सहायक निदेशक कार्यान्वयन मध्य क्षेत्र, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने किया । इस अवसर पर क्षेत्रीय प्रशिक्षण केन्द्र भोपाल के प्राचार्य श्री राजीव गंगवार एवं भोपाल अंचल के अंचल प्रमुख भी उपस्थित थे।

राजभाषा हिंदी तिमाही प्रगति रिपोर्ट—महत्वपूर्ण बिन्दु

प्रत्येक तिमाही की समाप्ति के सात दिनों के मध्य सभी शाखाओं/कार्यालयों को सिंगल साइन ऑन प्लेटफार्म पर हिंदी प्रगति रिपोर्ट अपलोड करना अनिवार्य है। यहां प्रगति रिपोर्ट भरते समय ध्यान में रखने योग्न महत्वपूर्ण बिंदु दिए गए हैं

1 – **राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3 (3)** के अंतर्गत सामान्य आदेश, ज्ञापन, संकल्प, अधिसूचनाएं, नियम करार, संविदा, टेंडर, नोटिस, संसदीय प्रश्न आदि शामिल हैं। आपकी शाखा के स्तर पर इस मद में कार्यालय आदेश तथा वसूली नोटिस आते हैं। जो कि अनिवार्यरूप से द्विभाषिक ही जारी किए जाने चाहिए।

(क) में धारा **3 (3)** के अंतर्गत शाखा द्वारा जारी कुल कागजात लिखे जाएंगें।

(ख) में धारा **3 (3)** के अंतर्गत द्विभाषिक रूप से जारी किए गए कागजात लिखने हैं।

(ग) हमेशा शून्य होगा क्योंकि धारा 3 (3) के अंतर्गत जारी होने वाले कागजात केवल अंग्रेजी में जारी नहीं किए जा सकते।

2- हिंदी में प्राप्त पत्र (राजभाषा नियम -5) , नियमत: हिंदी में प्राप्त सभी पत्रों का उत्तर हिंदी में ही दिया जाना चाहिए। हिंदी में प्राप्त किसी भी पत्र का उत्तर अंग्रेजी में नहीं दिया जा सकता

में हिंदी में प्राप्त कुल पत्रों की संख्या लिखी जाएगी

में आपने कितने पत्रों के उत्तर हिंदी में दिए यह लिखा जाएगा।

में आपने हिंदी में प्राप्त कितने पत्रों के उत्तर अंग्रेजी में दिए यह लिखा जाएगा यह हमेशा शून्य होगा। हिंदी में प्राप्त किसी भी पत्रका उत्तर अंग्रेजी में नहीं दिया जा सकता ।

3 – अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में दिए जाने की स्थिति में शाखा/कार्यालय को अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों का विवरण दिया जाना है। इसमें क, ख, ग तीनों क्षेत्रों से अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों का विवरण दिया जाना है। **यदि आपको 'ख' एवं 'ग' क्षेत्र से पत्र प्राप्त नहीं हुए हैं तो उन्हें शून्य लिखें।**

यह नोट करें कि अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जा सकता है और 'क' क्षेत्र में होने के नाते हमें अपना शत-प्रतिशत पत्राचार हिंदी में ही करना है।

4 – भेजे गए कुल पत्रों का ब्यौरा में आपकी शाखा/कार्यालय द्वारा 'क', 'ख','ग' क्षेत्र को मूल रूप में हिंदी में भेजे गए पत्रों का विवरण दिया जाना है। यदि आपकी शाखा ने 'ख' एवं 'ग' क्षेत्र को पत्र नहीं भेजे हैं तो शून्य लिखें।

हिंदी पत्राचार का लक्ष्य	
'क' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को	100%
'क' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को	100%
'क' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को	70%

हमारा अंचल 'क' क्षेत्र में ही स्थित हैं। प्रधान कार्यालय 'ग' क्षेत्र में है।क','ख','ग' क्षेत्रों के समाने हिंदी में भेजे गए पत्रों की संख्या, अंग्रेजी में भेजे गए पत्रों की संख्या, भेजे गए कुल पत्रों की संख्या और हिंदी में भेजे गए पत्रों का प्रतिशत लिखना है।

'5 फाइलों/दस्तावेज़ों पर लिखी गई टिप्पणियां में

(क) में आप द्वारा हिंदी में लिखी गई टिप्पणियों की संख्या लिखनी है।

(ख) में आप ने अंग्रेजी में जो टिप्पणी लिखीं हैं उनकी संख्या लिखनी है।

(ग) में टिप्पणियों की कुल संख्या लिखनी है। 'क' क्षेत्र के लिए हिंदी में 80% टिप्पणियां लिखे जाने का लक्ष्य है। इसका अनुपालन करें।

6 हिंदी कार्यशालाओं का विवरण शाखा द्वारा नहीं भरा जाएगा।

7. विभागीय /संगठनीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन के अंतर्गत **(क)** में आपको शाखा में आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की दिनांक लिखनी है। **(ख)** में सभी शाखाएं शून्य लिखेंगी क्योंकि शाखाओं के अधीनस्थ कोई अन्य कार्यालय नहीं है।

(ग) में इस तिमाही में आयाजित बैठकों की संख्या में 1 लिखा जाएगा क्योंकि प्रत्येक तिमाही में 01 बैठक आयोजित की जानी चाहिए।

(घ) में आपको यह जानकारी देनी है कि क्या बैठक के कार्यवृत्त हिंदी में जारी किए गए हैं। इसमें हां लिखा जाएगा । सभी शाखाओं/कार्यालयों के लिए बैठक आयोजित करना और उसका कार्यवृत्त जारी करना आवश्यक है।

8 कामकाज में हिंदी का प्रयोग में

(क) में आपको पासबुक हिंदी में भरने की सुविधा के बारे में लिखना है। फिनेकल10 में हिंदी का विकल्प उपलब्ध है।

(ख) में आपको जानकारी देनी है कि क्या ऋण वसूली पत्र हिंदी में जारी किए जाते हैं? ऋण वसूली पत्र हिंदी में ही जारी किए जाने चाहिए। **इसका उत्तर हां होना चाहिए।**

(ग) सारे फार्म (वाउचर/ड्राफ्ट/जमा रसीदें इत्यादि) द्विभाषिक हैं अथवा नहीं, इसकी जानकारी आपको देनी है। बैंक द्वारा प्रकाशित फार्मेट द्विभाषिक हैं। **उत्तर हां होगा** ।

9- में **तिमाही में शाखा द्वारा किए गए उल्लेखनीय कार्य /उपलब्धियों को विवरण** दिया जाएगा। इसके अंतर्गत यदि शाखा अथवा स्टॉफ सदस्य को नराकास के स्तर पर अथवा कोई अन्य पुरस्कार प्राप्त हुआ है तो उसका विवरण दें, किसी पत्रिका में किसी स्टाफ का लेख प्रकाशित हुआ है। शाखा द्वारा हिंदी में कोई प्रतियोगिता आयोजित की है तो उसका विवरण दिया जाएगा।

प्रगति रिपोर्ट सिंगल साइन ऑन पर सहायक शाखा प्रबंधक द्वारा प्रविष्ट (एंट्री) एवं शाखा प्रमुख द्वारा सत्यापित(वेरीफाई) की जाएगी।

राजभाषा हिंदी की तिमाही प्रगति रिपोर्ट सिंगल साइन ऑन पर भरते समय उपर्युक्त बिंदुओं को ध्यान में रखें तथा तिमाही की समाप्ति के सात दिनों के मध्य शाखा की प्रगति रिपोर्ट एसएसओ पर अपलोड कर दें।

हिंदी भाषा उस समुद्र जल राशि की तरह है जिसमें अनेक नदियां आकर मिली हों।

-श्री वासुदेव शरण अग्रवाल

भाषा देश की एकता का प्रधान साधन है।

- आचार्य चतुरसेन शास्त्री

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस 2026

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर श्री आलोक कुमार सहायक महाप्रबंधक

स्टाफ सदस्य कार्यक्रम में प्रतिभागिता करते हुए

27 फरवरी 2026 को अंचल कार्यालय लखनऊ में मातृभाषा दिवस का आयोजन किया गया। मातृभाषा दिवस 2026 के उपलक्ष में आयोजित कार्यक्रम में श्री आलोक कुमार सहायक महाप्रबंधक ने सभी स्टाफ सदस्यों को संबोधित किया। उन्होंने कहा हम अपनी मातृभाषा में जितनी सहज अभिव्यक्ति करते हैं उतनी सहजता से किसी अन्य भाषा में अभिव्यक्ति नहीं कर पाते। हमें अपनी मातृभाषा से सदैव जुड़े रहना चाहिए इससे हम अपनी सांस्कृतिक परंपराओं से भी जुड़े रहते हैं। ये सांस्कृतिक परंपराएं हमारे गौरवशाली अतीत का अवलंब और हमारे भविष्य का आधार हैं। हमें अपनी मातृभाषा पर गर्व होना चाहिए।

मातृभाषा दिवस के अवसर पर अंचल के स्टाफ सदस्यों के लिए एक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। यह प्रतियोगिता वर्तनी एवं वाक्य विचार से संबंधित थी। सभी स्टाफ सदस्यों ने प्रतियोगिता में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। इस अवसर पर अंचल कार्यालय के समस्त स्टाफ सदस्यों ने कार्यक्रम में प्रतिभागिता की।

पतझड़

सुश्री प्राची श्रीवास्तव

ग्राहक सेवा सहयोगी

यूं ही नहीं पतझड़ आते हैं,

बसंत की चाह लिए पत्तों को,

वो ही तो जगह दे जाते हैं,

यूं ही नहीं पतझड़ आते हैं।

यूं टहनियों से जुदा होते पत्ते,

कुछ सूखे तो कुछ अब भी रंगों से भरे,

सरसराती हवाओं के आगोश में लिपटे,

एक नए सफर पर, मंजिलों से परे,

कुछ सफ़र में कुचल जाते हैं,

तो कुछ नए बीज बन जाते हैं,

सबकी मंजिल अलग-अलग,

पर सफर का हिस्सा तो सब बन जाते हैं,

यूं ही नहीं पतझड़ आते हैं,

वो पतझड़ के दिनों में शाम का सन्नाटा,

मानों टहनियां बेजुबान सी हो जाती है,

खोने का गम या बसंत के आने की खुशी,

उस शाम की खामोशी,

कुछ अनसुलझे से ख्याल दिखलाती है,

न वो बयां कर पाते हैं, न हम समझ पाते हैं,

बस बिखरे पत्तों की आवाज़,

जो सिसक है या खिलखिलाहट,

एक सवाल बनके रह जाते हैं,

यूं ही नहीं पतझड़ आते हैं,

उन सूखी, बेरंग और शांत टहनियों में,

कुछ बात तो होती है,

यूं ही नहीं वे तस्वीरों का,

हिस्सा बन जाती है,

एक उम्मीद लिए बसंत के इंतज़ार में,

सूखी ही सही पर बाहें पसारे,

हर मौसम झेल जाते हैं,

यूं ही नहीं पतझड़ आते हैं।

मन की बात

श्रीमती दीप्ति विश्वकर्मा

वरिष्ठ प्रबंधक खुदरा ऋण हब

लखनऊ

पसीने की बूंदें उसके माथे पर चमक रही थी । जून की गर्मी और बिल जमा करने वालों की भीड़ से भरा वह विभाग का दफ्तर नन्हकू की नजरें मुख्य द्वार पर लगी हुई थीं कि कब साहब ऑफिस में प्रवेश करेंगे । 'नन्हकू' तब तक चपरासी की आवाज से उसका ध्यान भंग हुआ । ' नन्हकू ' ये कैसा विचित्र नाम रखा है माता पिता ने उसका ? कोई और नाम नही मिला उनको !! जबकि वो तो चपरासी से प्रमोशन पाकर बाबू बन गया , अभी पिछले ही साल , तभी तो उसे अभी तक सब नाम से ही बुलाते हैं । आदतें जल्दी कहां जाती हैं !!जबकि अपना नाम पसंद न होने की टीस के कारण ही तो उसने गांव के स्कूल मास्टर जी से पूछकर अपनी बेटी का कितना प्यारा सा नाम रखा था – राजकुमारी । आज अपनी उसी सुकुमार अपने हृदय सामाज्ञी की चिंता उसे खाए जा रही थी।

' नन्हकू , साहब बुला रहे हैं ' सुनते ही वह तेजी से साब के कमरे तक गया । उसे लगा जैसे इसी चार कमरों की दूरी पार करने में उसके जीवन की पूरी यात्रा उसके सामने से चित्रपट के समान घूम गयी जब छोटी सी तन्खा के सहारे उसने पांच साल की अपनी राजकुमारी को पूरे जतन से पालपोस कर बड़ा किया जब कि उसकी मां नामालूम सी बीमारी के चलते चल बसी थी । उसी तन्खा के बलबूते उसने अपना घर चलाया और बिटिया को पढ़ाने का सिलसिला आगे बढ़ाया ।

अब उसके विवाह के लिए अपने पीएफ से लोन लेने के लिए

साहब के दसियों चक्कर लगा चुका है पर बात बनती नजर

नही आ रही थी। अपने ही खाते से पैसे निकालने के लिए इतने झमेले ? उस पर साहब ने फरमान जारी कर दिया –

'नन्हकू बाबू , ये पैसा विभाग इस लिए देता है कि कर्मचारी रिटायर होने के बाद ठीक से जीवन यापन कर सके , किसी और काम के लिए नही . . '

पर बेटी का सही ढंग से विवाह न कर पाने का मलाल लेकर वह रिटायर होकर भी क्या चैन से जी पाएगा ?

पैसा मंजूर कर देते साब तब तो कोई बात बने ।

साहब के सामने पहुंचकर उसने अपनी बात रखनी चाही पर उनकी घूरती नजरें और उनकी वो कड़क आवाज और तनी मुद्रा देखकर वह सहम गया – ' मेरे कोट की धुलाई का बिल अभी तक खाते में नही पहुंचा । क्या करते रहते हो सारा दिन ? सीट का कितना काम बाकी पड़ा है अभी ? मेरा मुंह क्या ताक रहे हो , जाओ और पेंडिंग काम निबटाओ सबसे पहले ।'

उसके मन में आया कि ये कैसा सवाल है, गर्मी का मौसम और कोट की धुलाई का बिल ? पर उससे जवाब देते नही बना सो वह चुपचाप सीट पर लौट आया । पीएफ लोन के लिए उसकी उधेड़बुन नए सिरे से उसके अंदर चकरघिन्नी की तरह चलने लगी , अब फिर से वह कब कैसे कह पाएगा साहब से अपनी मन की बात ?

स्वच्छता पखवाड़ा

स्वच्छता की शपथ लेते यूकोजन

मजलिस की फेहरिस्त

श्रीअंशुमन मिश्रा

सहायक प्रबंधक

अंचल कार्यालय लखनऊ

रोज की ही तरह शुक्लाइन चौथी बाजार में जा पहुँची| पहुँचते ही बाजार की मुख्य सड़क के कोने पर खड़े केले के सौदागर के ठेले पर उनकी नज़र पड़ी| बड़े ही गुस्से में सड़क पार करके उसके पास जाने के लिए जैसे ही मुड़ीं तो शौकत मियाँ से भिड़ गईं| शौकत उम्रदराज आदमी थे सो बड़े सलीके से माफ़ी मांगने लगे| वैसे तो शुक्लाइन किसी को छोड़ती नहीं थीं लेकिन ठेले पर पहुँचने की जल्दी में ना तो उन्हें शौकत मियाँ का भिड़ना ही याद रहा और ना ही उनका माफ़ी माँगना|

"अरे चाची क्या घट गया जो इतनी जल्दीबाजी में सड़क पार कर रही हो!" अमजद सौदागर ने मुस्कुराते हुए शुक्लाइन से पुछा| "तू रुक अमजद, तेरा ठेला तो मैं अभी हटवाती हूँ, तूने मुझे क्या अंधी समझा है कि मेरे बेटे को सड़े केले दिए और पैसे भी ज्यादा लिए!" झल्लाती हुई शुक्लाइन ठेले से दो –चार केलों को हाथ में उठाते हुए बोलीं| "चाची हमने तो आज केले बेचे ही नहीं, अभी तो आये हैं और अभी हमपर बरसने लग गईं| ये भला कोई बात है|" "क्यूँ झूठ बोलता है, मैंने सुबह बंटी से कहा था केले तुमसे ही खरीदने को, और कोई तो बेचता ही नहीं इस मंडी में|" "अरे चाची आज सुबह मैं एक मिट्टी में गया था| अभी लौटा हूँ और बंटी से तो मैं अभी तक मिला ही नहीं|" "फिर उसे केले किसने बेचे?" शुक्लाइन केलों को नीचे रखते हुए बोलीं| "सुना है चाची, शिव मंदिर के कोने जो ज़ूबैदा दादी फूल बेचती हैं, वे आज कल कुछ फल भी बेच रही हैं| उनसे पूछ लो| और किसी को तो मैं ना जानू जो पूरी चौथी बाजार में फल बेचता हो|" जैसे सूरज के पूर्वाह्न से अपराह्न की ओर गतिशील होने से परछाई पलट जाती है वैसे ही चौथी बाजार की चाची, यानि शुक्लाइन, भी वहाँ से पूरब में शिव मंदिर की ओर चलीं केलों का हिसाब लेने। ऐसा नहीं की इस कस्बे में कोई और बाजार था कि इस मंडी को चौथी बाजार कहते थे| यह नाम तो तीर्थराज शुक्ला के दादा परशुराम शुक्ला के द्वारा लगभग 50 वर्ष पहले खुदवाए गए अपने चौथे कुँए के कारण पड़ गया था| परशुराम शुक्ला का इस क्षेत्र में बड़ा नाम था| दानवीर कर्ण भी शायद उनके सामने नाकाफ़ी होता| वे थे तो पैदाईशी रईस लेकिन ह्रदय के एकदम संगमरमर| सबकी मदद करने का शुभ संकल्प लेकर चलते तो थे लेकिन उनका एक लक्ष्य अपनी प्रसिद्धि को और बढ़ाना भी था| इस चौथे कुँए के आस पास लगभग सभी गाँवों से आने वाले रास्ते मिलते थे और परशुराम ने सोचा कि अपनी कोने की ज़मीन पर बावड़ी बनवाने से प्रसिद्धि तो मिलेगी ही कुछ लोगों का भला भी होगा| आस-पास के गाँवों में बसे लोग जब उस मोड़ से गुजरते तो श्याम की दुकान का पेठा खाकर और परशुराम की चौथी बावड़ी का निर्मल ठंडा पानी पी कर ही निकलते थे| परशुराम की प्रसिद्धि में और चार-चाँद लग गए| पूरे इलाके में उनका जलवा ही छा गया|

समय बीता और देखते ही देखते चौथे कुँए के आस-पास बहुत दुकाने बनने लगीं| और लगभग चार दशक बाद चौथा कुँआ तो रहा नहीं, रह गई तो उसके इर्द-गिर्द की चौथी बाजार| परशुराम भी स्वर्ग सिधार गए पर उनके लगाये पेड़ों के फल अब उनकी तीसरी पीढ़ी खा रही थी| आधुनिकता का अनुसरण कर उसे आत्मसात करने वाला ही समयानुकूल प्रासंगिक बना रह सकता है| इसी राह पर चलते हुए परशुराम के पोते तीर्थराज शुक्ला ने पूरी चौथी बाजार में दुकानों के किराये लेने और उनमें दैनिक सुविधाओं की व्यवस्था की ज़िम्मेदारी ले ली| कोई भी दुकान बिना तीर्थराज को शुल्क दिए नहीं चल सकती थी और वह सभी की सहूलतों का ध्यान रखता था| दो-चार गावों से बीस-बाईस लड़कों की टोली उसके लिए दिन-रात मेहनत करती रहती थी|

अमूमन तो सब ठीक ही रहता था और वह भी कई बार दुकानदारों की विषम परिस्थितियों में विनती सुन शुल्क में कमी भी कर देता था| बुजुर्गों और नौजवानों से उसका मित्रवत व्यवहार था|

आज तक शायद कभी भी किसी ने उसे अपशब्द नहीं कहे होंगे| और नदी के दूसरे किनारे की तरह थी उनकी पत्नी लक्ष्मी, जिन्हें पूरी बाजार शुक्लाइन चाची कहती थी| वैसे तो शुक्लाइन सर्वगुण संपन्न थीं लेकिन थीं कान की कच्ची| उनके सभी गुण थे तो कमला जैसे लेकिन अक्सर अति उत्सुक होने के कारण ही तीर्थराज कमलापति होने से रह जाते थे| हालाँकि इसके बिलग तीर्थराज भास्मंग्धारी जैसे पूर्ण संतोषी थे| प्रतिदिन घर के काम-काज निबटा कर शुक्लाइन बाजार जाती थीं|

पूरी दोपहर घूम-घूमकर चालीस की चालीस दुकानों पर नज़र रखती थीं| सबसे बातें करती थीं और अपनी शेखी बघारती थीं| अधिकतर उनसे बात करने से कतराते थे लेकिन उनके स्वामी की सोच कर सभी उनके व्यवहार को अनदेखा कर देते थे|

आज शुक्लाइन के घर प्रातः काल से सत्यनारायण भगवान् की कथा थी| सो उन्होंने अपने सुकुमार पुत्र बंटी को बाजार केले लेने के लिए भेजा था| उसके द्वारा लाये गए कुछ केले सड़े निकले तो शुक्लाइन दांत पीसकर कथा के पांचों अध्यायों के समापन का इंतज़ार कर रही थीं| फल तो बाजार की मुख्य सड़क के प्रारंभ में अमजद सौदागर ही बेचता था तो कथा अनुष्ठान समापन होते ही शुक्लाइन निकल पड़ीं अमजद से लड़ने लेकिन अमजद ने जैसे ही ज़ुबैदा का नाम लिया शुक्लाइन की झल्लाहट कम होने लगी और उसकी गति मंदिर की ओर जाते हुए पग-पग धीमी होती जा रही थी| बाजार के मध्य में मुख्य सड़क के बाँई ओर पुराना शिव मंदिर पड़ता था और सड़क के दाँई ओर नई छोटी मस्जिद| वैसे तो आस-पास के गाँवों में हिन्दू ही बाहुल्य थे और मुस्लिम परिवार बहुत कम थे लेकिन शुक्लाइन के ददिया-ससुर, परशुराम, थे तो बहुत दूरदर्शी मंदिर और छोटी मस्जिद दोनों के ही निर्माण में उन्होंने मुख्य भूमिका निभाई थी और उनका नाम दोनों के ही पटशिला पर अंकित था| इसके पीछे चाहे भले ही उनका उद्देश्य अपनी प्रसिद्धि का विस्तार ही रहा हो, पर निश्चित ही इस कार्य ने उन्हें लगभग अजातशत्रु बनवा दिया था| इसी परिपाटी पर उनका पौत्र भी चल रहा था| ज़ुबैदा की उम्र लगभग कुछ अस्सी वर्ष के आस-पास रही होगी| वह मंदिर के पास फूल, मटके, मिट्टी के कलशे, माटी-दीप आदि बेचती थी| ज़ुबैदा की अधेड़ उम्र को देखते हुए ज़्यादा लोग उससे बात नहीं करते थे लेकिन तीर्थराज रोज प्रातःकाल शिव वंदना पूजन के बाद लगभग आध घंटे मंदिर की सीढ़ीओं पर बैठकर ज़ुबैदा से बातें करता था| वह अक्सर बाजार में सबसे कहता था कि उसके दादा इसे अपनी बहन मानते थे| इसी कारण उम्र के चौथे पड़ाव में, ज़ूबैदा, चौथे बाजार में कर-मुक्त अपना जीवकोपार्जन करती थी| उसका गाँव बाजार से लगभग दस किलोमीटर की दूरी पर था| उसके परिवार में पुत्र-पौत्रादि मिलाकर कुल सोलह लोग थे लेकिन कोई भी उसे घर के अन्दर रहने नहीं देना चाहता था इसलिए वह दिनभर मंदिर के कोने सामान बेचती थी और रात्रि में मंदिर की सीढ़ीयों पर सोती थी| चूँकि परिवार कुम्हार था, इसलिए प्रतिदिन उसके दो पोते एक साईकिल पर मिट्टी से बने सारे बर्तन लाकर उसे दे जाते और पिछले दिन की अधिकतम कमाई ले जाते|

ज़ुबैदा की सबसे पसंदीदा दोस्त शायद एक ही थी, जानकी, जो कि अभी पिछली शारदीय नवरात्रि के बाद पड़े दशहरे को हरिचरण में लीन हो चली थी| दोनों की दोस्ती कैसे हुई यह तो कोई नही जनता था लेकिन सब यही कहते थे कि दोनों हर समय वाक्-युद्ध करते रहते थे| छोटी मस्जिद के बनने से पहले से ही जानकी मंदिर के सामने, सड़क के दूसरी ओर, बोरे पर बैठकर फूल बेचती थी और सड़क के इस पार, मंदिर के कोने, ज़ुबैदा मिट्टी के बर्तन| दोनों रोज सुबह भोर में उठकर साथ जाते थे और परशुराम के बड़े बगीचे से फूल तोड़कर धोती में बांधकर लाते थे| दिन भर ज़ुबैदा मिट्टी के दीये, कलशे, परई बेचती और जानकी ताज़े फूल| रात में दोनों साथ में मंदिर की सीढ़ियों पर सोते थे| फिर, छोटी मस्जिद बनने के बाद भी उसके मौलवी शौकत मियाँ ने जानकी को मस्जिद के आगे से हटने ना दिया| “जानकी बहन, तुम्हारे फूल रखने से यह मिट्टी बहुत पाक़ हो गई है और इसीलिए यहाँ ख़ुदा की इबादत हो पाती है| इस बाजार के दुकानदारों की फेहरिस्त में तुम दोनों ही सबसे आगे हो|”

मौलवी अक्सर यह बात जानकी और ज़ूबैदा से कहते थे और हर दिन शाम को दोनों को सलाम करके अपने घर जाते थे|

पिछली बीती शारदीय नवरात्री में अचानक जानकी की तबियत बहुत ख़राब हो गई थी| क्योंकि जानकी काफी वृद्ध हो चली थी और किसी को उससे कोई ख़ास सहानुभूति थी नहीं इसलिए बाजार के कुछ लोगों ने साधारण दवाई करवा कर छोड़ दिया| लेकिन उसकी स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ| नवमी के दिन शाम को, बहुत हिम्मत करके, दोनों सखियाँ किसी तरह हिलते-डुलते तीर्थराज के घर पहुँची| उन्हें उम्मीद थी की तीर्थराज जरूर कुछ इलाज करवा देगा|

सब उसके स्वर्गीय दादा परशुराम की देन थी और इसके लिए वह हमेशा अपनी कृतज्ञता सबके सामने व्यक्त करता था| उसके घर पहुँचने पर दोनों को पता चला कि कचहरी के जरूरी काम से वह दो दिन पहले ही शहर गया हुआ था| काफी देर तक गुहार करने के बाद शुक्लाइन घर के दरवाजे पर आईं| जानकी की तपती देह को देखकर ज़ुबैदा ने उससे कहा "अरे तीरथ की बहू, जरा किसी छोरे को भिजवा कर इसका इलाज करवा दो| शायद दो-तीन दिन में ठीक हो जाए|" "इन दोनों करमजलियों को अभी ही आना था", लक्ष्मी ने झल्लाते हुए सोचा| "अभी घर में कोई नहीं है| जैसे ही लड़के आयेंगे बोल दूँगी| कल देख लेना|" बोल कर शुक्लाइन अन्दर चली गई| उसकी बात सुन कर दोनों उठने को हुई की तभी जानकी गिर पड़ी| ज्वर-पीड़ा से उसके शरीर की शक्ति क्षीण हो रही थी| क्या करती दोनों वृद्धा, सो तीर्थराज के घर के दरवाजे की गौशाला में नांद के पास बैठ गईं| जानकी से बैठा नहीं जा रहा था तो उसने अपना सर ज़ुबैदा की गोद में रख दिया| ज़ुबैदा अश्रूरत होकर उसके तपते माथे पर अपना हाथ फेरते हुए उसे देखते रही| बैठे-बैठे ना जाने कब उसकी आँख लग गई|

भोर में चिड़ियों की चहचहाहट ने उसकी आँखें खोल दीं| उसके आँसू उसके गालों पर ही सूख गए थे| अपने हाथों से आँखों को मलते हुए उसने जम्हाई ली और अपनी गोद में शान्ति से सर रखकर सोती हुई जानकी को देखा| "चल री जानकी उठ, फूल लेने चलेगी कि नहीं! उठ जल्दी!" जानकी अब भी शान्ति से सो रही थी| ज़ुबैदा उसके ठण्डे मुख की मुस्कराहट भरे मौन को समझ गई| बिना कोई शोर किये उसके तन को अपनी पूरी ताकत से खींच कर तीर्थराज के घर के बैठके से बहार लाई| उसी समय उस घर से लगभग पचास मीटर दूर रास्ते से मौलवी शौकत साईकिल से कहीं जा रहे थे| उनकी नज़र इस बूढी पर पड़ी| इससे पहले कि ज़ुबैदा कुछ और सोच पाती कि शौकत वहाँ आ गए| ज़ुबैदा की आँखों के शून्य और जानकी के ठण्डे पड़े शरीर को देखकर वह असहज हो गए| कुछ लोगों को बुलाया और विजयदशमी की सुबह ही उसकी अंतिम क्रिया करवाई| तीर्थराज अपने कार्य से लौटा और उसे सब पता चला| चौथी बाजार में किसी ने किसी से कुछ नहीं कहा| कहता भी क्यों आखिर उन दोनों वृद्धाओं से किसी को क्या लेना-देना था| सबके लिए तो जीवन सामान्य और शान्त ही था|

कभी-कभी प्रकृति का मौन मनुष्य के अन्दर चल रहे संताप-द्वन्द के ज्वार की अग्नि में घी का काम करता है| यह उद्विग्नता-बेचैनी का ज्वालामुखी बहुत संवेदनशील होता है जिसको फटने के लिए बस जज़्बातों के एक छोटे से स्खलन की ही जरूरत होती है| चलते-चलते शुक्लाइन मंदिर के पास आ पहुँची| पूरे रास्ते एक भी दुकान में नहीं गई| कई दुकानदार तो बाहर आकर उसे घूर रहे थे| ये आज चुप-चाप कैसे चली गई| जहाँ-जहाँ से वह गुज़र रही थी वहां सन्नाटा छाता जा रहा था| अब वह मंदिर चौक के कोने पर आ गई| मंदिर के कोने में दुर्बल काया लिए ज़ुबैदा पाचान्गुरों पर, दोनों घुटनों के बीच, अपनी ठोड़ी टेककर बैठी थी| शुक्लाइन सभी मिट्टी की चीज़ों को देख ही रही थीं की तभी उसकी नज़र बगल के चबूतरे पर बोरे पर रखे एक-आध दर्जन केलों पर पड़ी| शायद इन्हीं में से कुछ केले उसने बंटी को दिए थे| इससे पहले कि वह कुछ बोलती शौकत मियाँ ने छोटी मस्जिद के दर से उसे देखा और सड़क पार कर वहाँ आ गए| "देखो बहू, मैंने अमजद और तुम्हारे बीच की पूरी बात सुनी है| ज़ूबैदा को ये केले कल मैंने दिए थे| उसके पास खाने को कुछ नहीं था| आज सुबह बंटी बाजार में केले ढूँढ रहा था| आज अमजद आया नहीं था और उसे केले सिर्फ इसके पास ही दिखे| वह आया और इससे कहने लगा कि माँ ने मँगवाए हैं| इस बावली ने बिना देखे-परखे दे भी दिए| इसने दो दिनों से अभी तक कुछ खाया नहीं है| बेचारी रोज सुबह तुम्हारे बगीचे में जाती है और फूल तोड़कर लाती है| इसे लगता है कि शायद इसकी सहेली इन फूलों में इसके साथ ही है| देखो आँखें बंद कर शायद उसी को याद कर रही है| दशहरे के बाद से इसने शायद ही किसी से कुछ बोला हो| इसे कुछ दोष मत देना, इससे कुछ मत कहना| बस तुमसे इतनी गुज़ारिश है|" यह कहते हुए शौकत ने शुक्लाइन के आगे हाथ जोड़ लिए| कई लोग वहाँ इकठ्ठा हो गए थे| शुक्लाइन की आँखें अब डबडबा रही थीं|

वह ज़ुबैदा के बगल में धीरे से बैठी और उसके कंधे पर धीरे से अपना माथा टीकाकर सुबसुबाने लगी| "मोहे माफ़ कर दो अम्मा! हम, तुम दोंनों को ना समझ पाए| उसकी आँखों से झार -झार बहते हुए आँसुओं ने इस संध्या बेला में नीचे धोती पर रखे सभी मुरझाये फूलों पर मानों सुबह की शबनम बिखेर दी| रोज़ की तरह चौथी बाजार में शाम की मजलिस की रौनक फैलने लगी और इसकी फेहरिस्त में उन दो बूढ़ी सखियों का नाम ही सबसे अव्वल था|

मां

श्रीमती सुजाता आनंद,

वरिष्ठ प्रबंधक,

अंचल कार्यालय लखनऊ

जिस दिन से घर से विदा हुई मां,

घर-आंगन- मन सूना सा है,

जब से गई मां तुम्हारी काया,

कुछ पहले सा न हो पाया,

हर कोने में यादें हैं बस,

प्यार भरी, मनुहार भरी,

मां की गोदी, वो मीठी लोरी,

मां की बोली जैसे मिश्री की गोली,

बन गईं हैं यादें, केवल यादें,

किससे अपना दुख हम बांटें,

किससे कहें मन की बातें,

'कैसी हो बेटा' ये शब्द नहीं केवल,

जादुई सा अहसास थे ये,

सुनते ही जिनको मन खिल जाता,

अनमोल सुख था मिल जाता,

बड़ी समस्या भी तब छोटी सी लगती थी,

जिंदगी एक पल भी यूं न रूकती थी,

अब स्थितियों से खुद ही लड़ती हूं,

नाम तुम्हारा ले मन में, आगे को बढ़ती हूं ,

स्मृतियां हीं है शेष तुम्हारी,

अंतर्मन में बस गई हो ऐसे,

जैसे देह में बसती सांसें,

तुम जैसा न कोई धरा में,

तुम कहीं नहीं दिखती अब सदेह,

पर भीतर बसती हो तुम मेरे,

रहो हमेशा साथ तुम मेरे,

फिर से बेटी बन जन्म लूं तुमसे,

स्पर्श तुमहारा फिर मैं पाऊं,

दौड़ूं, खेलूं लिपटूं, तुमसे,

बच्ची बन फिर,

तुम्हारी गोद में सो जाऊं।

बस यादें रहतीं हैं

अविनाश तिवारी ,

वरिष्ठ प्रबंधक महोना शाखा

कोई है आता , कोई है जाता
कोई सदा न रहता पास ।
बाकी सब तो खो जाता है –
बस यादें रहती हैं साथ ।

भोला सा सुंदर बचपन बीता ,
छूटा खेलों का वो साथ ।
जब चिंता न थी किसी बात की ,
उस दुनियां के थे सरताज ।

छूट गयी वो दुनियां सुंदर ,
बस यादें रह गयी है पास ।
बाकी सब तो खो जाता है ,
बस यादें रहती है साथ।

विद्यालय जब गए तो पाया ,
हमने गुरूओं से अद्भुत ज्ञान ,
गणित अंग्रेजी , हिंदी जानी ,
जाना दुनिया का विज्ञान ।

नए मीत फिर मिले यहां पर ,
दुनियांदारी से अनजान ।
धीरे से संग उनका छूटा ,
नए लोग संग नया प्रभात ।

यादे रह गयी है ज्ञान रूप में ,
न सखा , न गुरू , बस उनकी बात,
बाकी सब तो खो जाता है
बस यादें रहती हैं साथ।

कर्मक्षेत्र के लिए चला जब ,
तब छूटा स्वजनों के साथ।
संस्कार बन यादें रह गयी ,
यादों में रह गया वो प्यार ।
कर्मक्षेत्र में मिले कई फिर,
कर्मनिष्ठ जन श्रेष्ठ अपार,

किंतु समय के साथ बन गए ,
वे भी यादों का संसार ।
पर जाने से पहले कर गए
निष्ठा , ज्ञान का जो संचार ,

मार्ग प्रशस्त कर जिनके द्वारा
आगे बढ लूंगा अविकार ।
इन यादों से ही जीवन है
इनसे ही है सब साकार
बाकी सब तो खो जाएगा
यादें केवल रहती साथ ।

नराकास लखनऊ –उपलब्धियां

सुश्री प्राची श्रीवास्तव पुरस्कारप्राप्त करते हुए

सुश्री सारिका गुप्ता पुरस्कारप्राप्त करते हुए

सुश्री अनीता कुमारी पुरस्कार प्राप्त करते हुए

श्री अंशुमन मिश्रा सम्मान प्राप्त करते हुए

श्रीमती तनुश्री वर्मा सम्मान प्राप्त करते हुए

नराकास लखनऊ के तत्वावधान में सदस्य बैंकों द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत एवं नराकास की छमाही पत्रिका 'नगरप्रभा' के रचनाकारों को सम्मानित किया गया। नराकास अध्यक्ष श्री पंकज कुमार ने विजेताओं को पुरस्कृत एवं रचनाकारों को सम्मानित किया।

शक्ति का नाम ही नारी है

श्री शशांक दीक्षित

प्रबंधक, वसूली विभाग

अंचल कार्यालय

नवरात्रि भारत का एक अत्यंत पावन और आध्यात्मिक पर्व है। यह केवल देवी पूजा तक सीमित नहीं है, बल्कि नारी शक्ति के विविध रूपों को समझने, उन्हें आत्मसात करने और जीवन में उतारने का एक सशक्त माध्यम भी है। यह पर्व हमें यह सिखाता है कि नारी किसी एक भूमिका तक सीमित नहीं, बल्कि वह सृजन, संघर्ष, ज्ञान, ममता और प्रेरणा का समग्र स्वरूप है। माँ दुर्गा के नौ स्वरूप नारी के बहुआयामी व्यक्तित्व के प्रतीक हैं, जो आज भी हमारे समाज में जीवंत रूप में दिखाई देते हैं।

शैलपुत्री के रूप में नारी परिवार की मजबूत नींव होती है। वह धैर्य, स्थिरता और जिम्मेदारी का प्रतीक है। जैसे बछेंद्री पाल ने एवरेस्ट पर विजय प्राप्त कर यह सिद्ध किया कि दृढ़ संकल्प वाली नारी किसी भी ऊँचाई को छू सकती है, उसी प्रकार हर घर में माँ या बहन परिवार को मजबूती प्रदान करती है।

ब्रह्मचारिणी का स्वरूप नारी के ज्ञान, तपस्या और आत्मनिर्भरता को दर्शाता है। इस रूप में नारी अपने लक्ष्य के प्रति पूर्ण समर्पित रहती है। किरण बेदी इसका उत्कृष्ट उदाहरण हैं, जिन्होंने अपने अनुशासन, शिक्षा और दृढ़ संकल्प से समाज में एक नई पहचान बनाई और अनेक महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा दी।

चंद्रघंटा के रूप में नारी साहस, आत्मविश्वास और अन्याय के विरुद्ध खड़े होने की शक्ति का प्रतीक है। सावित्रीबाई फुले ने समाज की रूढ़ियों को तोड़ते हुए महिलाओं की शिक्षा के लिए संघर्ष किया और यह सिद्ध किया कि साहस ही परिवर्तन का आधार है।

कूष्मांडा का स्वरूप सृजन, ऊर्जा और सकारात्मकता का प्रतीक है। इस रूप में नारी जीवन में नई ऊर्जा का संचार करती है। सुधा मूर्ति ने अपने कार्यों और समाजसेवा के माध्यम से यह दिखाया कि सकारात्मक सोच और सृजनात्मकता से समाज को बेहतर बनाया जा सकता है।

स्कंदमाता के रूप में नारी की ममता, त्याग और संरक्षण की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। जीजाबाई ने शिवाजी महाराज को महान योद्धा और आदर्श शासक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह दर्शाता है कि एक माँ के संस्कार समाज की दिशा और दशा तय कर सकते हैं।

कालरात्रि का स्वरूप नारी के प्रचंड, निर्भीक और अन्याय के विरुद्ध उग्र रूप का प्रतीक है। 'निर्भया' की घटना ने पूरे समाज को झकझोर दिया और महिलाओं की सुरक्षा के प्रति व्यापक जागरूकता पैदा की। यह रूप हमें सिखाता है कि अन्याय के खिलाफ आवाज उठाना अत्यंत आवश्यक है।

महागौरी के रूप में नारी शांति, करुणा और पवित्रता की प्रतीक है। इस स्वरूप को हम अहिल्याबाई होल्कर में स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। वे अत्यंत सरल, धार्मिक और न्यायप्रिय शासक थीं। उन्होंने अपने जीवन को सेवा और तपस्या को समर्पित कर समाज के उत्थान हेतु अनेक मंदिरों और धर्मस्थलों का निर्माण करवाया। उनकी करुणा और जनकल्याण की भावना माँ महागौरी के स्वरूप को जीवंत करती है। अंततः, **सिद्धिदात्री** के रूप में नारी प्रेरणा, मार्गदर्शन और सफलता की राह दिखाने वाली शक्ति बनती है। कल्पना चावला ने अंतरिक्ष में जाकर यह सिद्ध किया कि नारी के सपनों की कोई सीमा नहीं होती और वह हर क्षेत्र में नई ऊँचाइयाँ प्राप्त कर सकती है।

नवरात्रि के ये नौ रूप केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं हैं, बल्कि यह हमारे समाज की प्रत्येक नारी में विद्यमान गुणों का उत्सव हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हम इन रूपों को केवल पूजें ही नहीं, बल्कि उन्हें समझें, अपनाएँ और अपने जीवन में उतारें। नारी का सम्मान, सशक्तिकरण और समान अवसर ही नवरात्रि का वास्तविक संदेश है, जो एक सशक्त, संवेदनशील और संतुलित समाज के निर्माण की ओर कदम है।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2026 - राजभाषा संगोष्ठी

श्री आशुतोष सिंह, अंचल प्रमुख लखनऊ(बीच में),श्रीमती निकीता पाण्डेय उप अंचल प्रमुख, लखनऊ(बाईं ओर), श्री नीलेश भोर ,उपमहाप्रबंधक प्र.का. (दाईं ओर), श्री आलोक कुमार, सहायक महाप्रबंधक संसाधन विभाग

श्री आशुतोष सिंह, अंचल प्रमुख लखनऊ प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए

यूको बैंक अंचल कार्यालय लखनऊ द्वारा दिनांक 10.03.2026 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में अंचल की महिला स्टाफ सदस्यों ने प्रतिभागिता की। संगोष्ठी का विषय – 'अगणित रूपों में प्राणवायु सी, सृष्टि का आधार हो तुम' था। संगोष्ठी की अध्यक्षता अंचल प्रमुख श्री आशुतोष सिंह ने की।

संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप श्री नीलेश भोर, उप महाप्रबंधक, एसएसएमई प्रधान कार्यालय उपस्थित थे। संगोष्ठी की अध्यक्षता अंचल प्रमुख श्री आशुतोष सिंह ने की। श्री आलोक कुमार सहायक महाप्रबंधक संसाधन विभाग, अंचल कार्यालय ने सभी का स्वागत किया। श्रीमती निकीता पाण्डेय, उप अंचल प्रमुख ने समस्त प्रतिभागियों को संबोधित किया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री नीलेश भोर ने कहा श्री एक सक्षम महिला ही अपने परिवार में संस्कारों का बीजारोपण करती है जो कि विभिन्न पड़ावों से गुजरते हुए सक्षम समाज के मज़बूत वृक्ष के रूप में पल्लवित एवं पुष्पित होता है। महिलाओं का स्थान हमारे जीवन में प्राणवायु की तरह है। वही हमारे होने का आधार है।

श्री आशुतोष सिंह ने कहा कि यदि हम चाहते हैं कि हमारा समाज विकास के पथ पर अग्रसर रहे तो हमें हमारे देश की महिलाओं को और भी अधिक सक्षम बनाना होगा। इसके लिए हमारा बैंक निरंतर प्रयासरत है । हमारी विभिन्न योजनाएं नारी शक्ति को समर्पित हैं। एक महिला के शिक्षित होने से पूरा परिवार शिक्षित होता है और एक महिला के आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने पर तीन परिवारों को आर्थिक संबल मिला है। महिलाएं हमारे समाज का अहम हिस्सा हैं हमारे देश में सशक्त महिलाओं की एक लंबी सूची रही है जो कि प्रतिदिन आगे ही बढ़ रही है।

श्रीमती निकीता पाण्डेय, उप अंचल प्रमुख, लखनऊ ने कहा कि महिलाओं की हमारे जीवन के सभी क्षेत्रों में अहम भूमिका है। किसी भी परिवार के लिए केन्द्रबिंदु एक महिला ही होती है। मां, बहन, पत्नी आदि के रूप में किसी परिवार के लिए वो प्राणवायु का काम करती है । उनके बिना किसी घर की कल्पना नहीं की जा सकती है। महिलाएं ही किसी मकान को घर बनाती हैं। केवल बाहर जा कर कार्य कर रहीं महिलाएं ही समाज में सक्रिय योगदान नहीं दे रहीं है। घर पर रह कर भी महिलाएं समाज को सक्षम बनाने का काम कर रहीं हैं। आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महिलाएं अपना योगदान दे रहीं हैं। चाहे आर्थिक क्षेत्र हो या सामाजिक महिलाएं अपने कर्तव्यों को बखूबी निभा रहीं हैं। स्त्री और पुरुष समाज एवं जीवन के अभिन्न अंग हैं। महिलाओं की भूमिका को किसी भी प्रकार से कम नहीं आंका जा सकता। समाज में शिक्षा के प्रचार प्रसार से महिलाओं की स्थिति में बदलाव आया है और आज महिलाएं तेज़ी से तरक्की कर रहीं हैं।

श्री आलोक कुमार, सहायक महाप्रबंधक, संसाधन विभाग ने अपने वक्तव्य में हमारे देश की महिलाओं के गौरवशाली अतीत पर प्रकाश डालते हुए कहा कि किसी भी समाज या परिवार में महिलाओं के सक्षम होने पर ही समाज विकसित होता है और सक्षम बनता है। आज हमारे देश की महिलाएं अंतरिक्ष तक पहुंच चुकी हैं। समाज के विकास में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि महिलाएं हमारे जीवन में प्राणवायु सदृश्य हैं जो कि सृष्टि का आधार है। कार्यक्रम का संचालन डॉ०शिल्पी शुक्ला, वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा ने किया ।

सरफेसी अधिनियम

श्रीमती अनीता कुमारी

वरिष्ठ प्रबंधक,

एसएमई ऋण हब

सरफेसी का पूरा नाम सिक्यूरिटाइजेशन एंड रिकंस्ट्रक्शन ऑफ फाइनेंशियल ऐसेट एंड एनफोर्समेंट ऑफ सिक्योरिटी इंटरेस्ट अधिनियम 2002 है। यह अधिनियम भारत की बैंकिंग और वित्तीय प्रणाली को मजबूत बनाने के उद्देश्य से बनाया गया एक महत्वपूर्ण कानून है। सामान्य बोलचाल में इसे सरफेसी अधिनियम कहा जाता है। यह कानून मुख्य रूप से बैंकों और वित्तीय संस्थानों को ऋण की वसूली के लिए विशेष अधिकार प्रदान करता है ताकि वह बिना लंबी न्यायिक प्रक्रिया के अपना बकाया धन वसूल सके।

सरफेसी अधिनियम की पृष्ठभूमि

1990 के दशक में भारत की बैंकिंग व्यवस्था कई समस्याओं से जूझ रही थी। बैंकों द्वारा दिए गए ऋणों की वसूली समय पर नहीं हो पा रही थी। बड़ी संख्या में लोग और कंपनियां ऋण लेकर उसे वापस नहीं कर रहे थे इससे बैंकों के पास गया अनिष्पादित परिसंपत्तियों अर्थात एनपीए की मात्रा लगातार बढ़ने लगी। जब किसी ऋण खाते में 90 दिनों तक ब्याज या मूलधन का भुगतान नहीं होता है तो वह खाता एनपीए घोषित कर दिया जाता है।

लगातार एनपीए बढ़ने से बैंकों की आर्थिक स्थिति कमजोर हो रही थी। बैंकों को ऋण वसूली के लिए दीवानी न्यायालय में मुकदमे दायर करने पड़ते थे। जिनमें कई वर्षों तक सुनवाई चलती रहती थी। इससे बैंकिंग प्रणाली पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा था। इसी समस्या के समाधान के लिए भारत सरकार ने नरसिम्हम समिति और अंध्यारुजिना समिति की सिफारिश के

आधार पर सरफेसी अधिनियम लागू किया। यह अधिनियम 2002 में संसद द्वारा पारित किया गया और इस वर्ष लागू हुआ।

सरफेसी अधिनियम के उद्देश्य

सरफेसी अधिनियम का मुख्य उद्देश्य बैंकों और वित्तीय संस्थानों को यह अधिकार देना है कि वह सुरक्षित ऋणों की वसूली तेज और प्रभावी तरीके से कर सकें। इस अधिनियम के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

1. बैंकों और वित्तीय संस्थानों के फंसे हुए ऋण की शीघ्र वसूली
2. एनपीए की समस्या को कम करना
3. बैंकिंग प्रणाली को मजबूत बनाना
4. ऋण वसूली की प्रक्रिया को सरल बनाना
5. वित्तीय अनुशासन को बढ़ावा देना
6. परिसंपत्तियों के पुनर्गठन और प्रबंध की व्यवस्था करना
7. परिसंपत्ति पुर्निर्माण कंपनी को कानूनी मान्यता देना

सरफेसी अधिनियम मुख्य रूप से सुरक्षित ऋणों पर लागू होता है। सुरक्षित ऋण वो ऋण होता है जिसमें उधारकर्ता बैंक के पास कोई संपत्ति गिरती रखता है। यह संपत्ति मकान जमीन दुकान फैक्ट्री मशीनरी और अन्य मूल्यवान संपत्ति हो सकती है। यदि उधारकर्ता ऋण वापस नहीं करता है तो बैंक उसे गिरवी संपत्ति को बेचकर अपना पैसा वसूल कर सकता है। इसके विपरीत असुरक्षित ऋण में कोई संपत्ति गिरवी नहीं रखी जाती इसलिए सरफेसी अधिनियम ऐसे ऋणों पर लागू नहीं होता है।

सरफेसी अधिनियम की मुख्य विशेषताएं

अदालत की अनुमति के बिना करवाई- इस अधिनियम में सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि बैंक और वित्तीय संस्थान ऋण वसूली के लिए सीधे कार्यवाही कर सकते हैं। उन्हें पहले अदालत से अनुमति लेने की आवश्यकता नहीं होती है। इससे समय की बचत होती है और वसूली प्रक्रिया तेज हो जाती है। एनपीए घोषित होने पर कार्रवाई- जब कोई ऋण खाता एनपीए हो जाता है तब बैंक सरफेसी अधिनियम के अंतर्गत कार्यवाही शुरू कर सकता है। इसके लिए सबसे पहले उधारकर्ता को नोटिस भेजा जाता है।

गिरवी संपत्ति पर कब्जा- यदि उधारकर्ता निर्धारित समय में भुगतान नहीं करता है, तो बैंक गिरवी संपत्ति पर कब्जा कर सकता है और उसे बेच सकता है।

परिसंपत्ति पुनर्निर्माण कंपनी - यह अधिनियम परिसंपत्ति पुनर्निर्माण कंपनी को कानूनी मान्यता देता है। यह कंपनियां बैंकों के खराब ऋण खरीदती हैं और उनकी वसूली करती हैं।

ऋण वसूली न्यायाधीकरण (डीआरटी)- यदि उधारकर्ता को बैंक की कार्रवाई गलत लगती है तो वह डीआरटी में अपील कर सकता है।

सरफेसी अधिनियम के अंतर्गत प्रक्रिया –

धारा 13(2) के अंतर्गत नोटिस - जब कोई ऋण खाता एनपीए बन जाता है तो बैंक उधारकर्ता को 60 दिनों का नोटिस भेजता है। इस नोटिस में बकाया राशि का पूरा विवरण होता है। बैंक उधारकर्ता को चेतावनी देता है कि यदि 60 दिनों के भीतर भुगतान नहीं किया गया तो आगे कार्यवाही की जाएगी।

उधारकर्ता का उत्तर - उधारकर्ता बैंक को अपना पक्ष लिखित रूप से प्रस्तुत कर सकता है। बैंक उस उत्तर पर विचार करता है यदि बैंक को उत्तर उचित नहीं लगता तो वह आगे कार्यवाही जारी रख सकता है।

धारा 13(4) के अंतर्गत कार्यवाही- यदि 60 दिनों के भीतर का भुगतान नहीं होता है तो बैंक निम्नलिखित कदम उठा सकता है-

1.गिरवी संपत्ति पर कब्जा करना
2.संपत्ति को बेचकर ऋण वसूली करना
3.व्यवसाय का प्रबंध अपने हाथों में लेना
4.संपत्ति के प्रबंधन के लिए प्रबंधक नियुक्त करना
5.संपत्ति की नीलामी

बैंक संपत्ति का मूल्यांकन करवाता है और फिर सार्वजनिक नीलामी के माध्यम से उसे बेचता है नीलामी से प्राप्त राशि से बैंक अपना बकाया वसूल करता है।

परिसंपत्ति पुनर्निर्माण कंपनी

सरफेसी अधिनियम के अंतर्गत परिसंपत्ति पुनर्निर्माण कंपनी की स्थापना की गई। यह कंपनियां बैंकों के खराब ऋणों को खरीदती हैं। इसके बाद इन ऋणों की वसूली का प्रयास करती हैं। परिसंपत्ति पुनर्निर्माण कंपनी निम्नलिखित तरीके अपनाती है-

- ऋण पुनर्गठन समझौता
- संपत्ति की बिक्री
- प्रबंधन में बदलाव
- पुनर्भुगतान की नई योजना

इससे बैंकों का बोझ कम होता है और वह नए ऋण देने के में सक्षम हो जाते हैं

उधारकर्ताओं के अधिकार - हालांकि सरफेसी अधिनियम बैंकों को मजबूत अधिकार देता है लेकिन उधारकर्ताओं के हितों की सुरक्षा भी करता है। यदि उधारकर्ता को लगता है कि बैंक ने गलत तरीके से कार्रवाई की है, तो वह डीआरटी में अपील कर सकता है। डीआरटी दोनों पक्षों की बात सुनकर निर्णय देता है।

ऋण वसूली अपीलीय न्यायाधिकरण(डीआरएटी)

यदि डीआरटी के निर्णय से ग्राहक संतुष्ट न हो, तो वह डीआरएटी में अपील कर सकता है। प्राकृतिक न्याय का सिद्धांत बैंकों की निष्पक्षता और कानून के अनुसार कार्यवाही करनी होती है वह मनमानी नहीं कर सकते हैं।सरफेसी एक्ट कुछ मामलों में लागू नहीं होता है-

यह अधिनियम कुछ विशेष परिस्थितियों में लागू नहीं होता है जैसे कि-

- कृषि भूमि पर
- असुरक्षित ऋणों पर
- छोटे ऋणों पर
- जहां बकाया कुल ऋण कुल ऋण के 20% से कम हो
- कुछ विशेष प्रकार की संपत्तियों पर

कृषि भूमि को इस अधिनियम से बाहर रखा गया है ताकि किसानों के हितों की रक्षा की जा सके।

हालांकि यह अधिनियम प्रभावी है तथापि इसकी कुछ आलोचनाएं की जाती हैं-

यह कहा जाता है कि बैंक इस अधिनियम के माध्यम से कठोर एवं अनुचित कार्रवाई करते हैं।

कमज़ोर अर्थिक स्थिति वाले लोग कभी कभी इसके अंतर्गत की गई कार्रवाई से बहुत अधिक प्रभावित होते हैं।

कई बार नीलामी में संपत्ति का उचित मूल्य नहीं मिल पाता।

संपत्ति जब्त करने की प्रकिया में अधारकर्ताओं पर मानसिक दबाव बढ़ सकता है।

इस अधिनियम की कमियों को दूर करने के लिए इसमें समय-समय पर संशोधन किए गए हैं। जैसे कि ई-नीलामी की व्यवस्था करना। प्रक्रिया को पारदर्शी बनाना,संपत्ति पुनर्निर्माण कंपनी को अधिक अधिकार देना।

किसी भी देश की अर्थव्यवस्था उसकी बैंकिंग प्रणाली पर निर्भर करती है। यदि बैंक ऋण की वसूली नहीं कर पाएंगे तो वह नए ऋण देने में सक्षम भी नहीं होंगे। सरफेसी अधिनियम ने बैंकों की वसूली क्षमता को बढ़ाया है इससे उद्योगों और व्यापार को अधिक ऋण उपलब्ध हुआ है। उसमें निवेश उत्पादन और रोजगार में वृद्धि हुई है। यह अधिनियम विदेशी निवेशकों के लिए भी सकारात्मक संदेश देता है कि भारत की बैंकिंग प्रणाली मजबूत और सुरक्षित है अंत में कहा जा सकता है कि सरफेसी एक्ट 2002 भारतीय बैंकिंग और वित्तीय प्रणाली का एक महत्वपूर्ण कानून है। इसने बैंकों और वित्तीय संस्थानों को ऋण वसूली के प्रभावी अधिकार प्रदान किए हैं तथा एनपीए की समस्या को कम करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस अधिनियम ने ऋण वसूली प्रक्रिया को तेज, सरल और प्रभावी बनाया है। सभी उधारकर्ताओं को डीआरटी और डी आर ए टी के माध्यम से न्यायपालिका के अधिकार भी दिए हैं। हालांकि इसकी में कुछ सीमाएं हैं और आलोचना भी हैं फिर भी यह अधिनियम भारतीय बैंकिंग व्यवस्था को मजबूत बनाने और आर्थिक विकास को गति देने में अत्यंत महत्वपूर्ण साबित हुआ है आज सरफेसी अधिनियम वित्तीय अनुशासन, बैंकिंग सुरक्षा और आर्थिक स्थिरता का एक प्रमुख आधार माना जा सकता है

विश्व हिंदी दिवस 2026

विश्व हिंदी दिवस पर स्टाफ श्री आशुतोष सिह ,अंचल प्रमुख लखनऊ एवं स्टाफ सदस्य

विश्व हिंदी दिवस 2026 के उपलक्ष में अंचल कार्यालय लखनऊ में स्टाफ सदस्यों के लिए दिनांक 28.01.2026 को कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अंचल प्रमुख श्री आशुतोष सिंह ने कीं। इस अवसर पर स्टाफ सदस्यों ने स्वरचित रचनाओं का पाठ किया श्री अंशुमन मिश्रा ने काव्य पाठ किया, श्री शंशांक दीक्षित द्वारा विश्व हिंदी दिवस के इतिहास पर प्रकाश डाला गया। संसाधन प्रमुख श्री आलोक कुमार ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए।

कुछ मीठा हो जाए..

चॉकलेट बनाना केक

श्रीमती तनुश्री वर्मा

वरिष्ठ प्रबंधक, अंचल कार्यालय

सामग्री

* 2 पके हुए केले (अच्छी तरह मैश किए हुए)
* ¼ कप तेल या पिघला हुआ मक्खन
* ½ कप गुड़ का पाउडर
* 1 कप गेहूं का आटा
* 2 बड़े चम्मच कोको पाउडर
* ½ कप दूध
* 1 छोटा चम्मच बेकिंग पाउडर
* ½ छोटा चम्मच बेकिंग सोडा
* 1 छोटा चम्मच वनीला एसेंस
* कटे हुए ड्राई फ्रूट्स (इच्छानुसार)

विधि

1. केले को एक बड़े बर्तन में अच्छी तरह मैश कर लें।
2. इसमें तेल (या पिघला हुआ मक्खन) और गुड़ का पाउडर डालकर अच्छी तरह मिलाएं।
3. अब गेहूं का आटा, कोको पाउडर और दूध डालकर मिश्रण तैयार करें।
4. बेकिंग पाउडर, बेकिंग सोडा और वनीला एसेंस डालकर हल्के हाथों से मिलाएं।
5. कटे हुए ड्राई फ्रूट्स मिलाएं।
6. मिश्रण को चिकनाई लगे केक मोल्ड में डाल दें।
7. ऊपर से थोड़े और ड्राई फ्रूट्स डालकर सजाएं।
8. पहले से गरम किए हुए ओवन में 160°C पर 25 मिनट तक बेक करें।
9. केक को थोड़ा ठंडा होने दें और फिर परोसें।

सुझाव

* अधिक चॉकलेटी स्वाद के लिए 2–3 बड़े चम्मच चॉकलेट चिप्स मिला सकते हैं।
* अखरोट और बादाम इस केक के साथ बहुत अच्छे लगते हैं।
* यदि केले बहुत मीठे हैं, तो गुड़ की मात्रा थोड़ी कम कर सकते हैं।

आपका नरम, स्वादिष्ट और पौष्टिक चॉकलेट बनाना केक तैयार है!

एक टीम, एक स्वप्न

राजभाषा का प्रकाश, बैंक का विकास